



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सए सए उवदणो,
सिद्धिमेव ण अण्णहा।

अपने मत की प्रशंसा करने
वाले कहते हैं अपने-अपने
सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही
सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से
नहीं होती।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 23 • 13 - 19 मार्च, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-03-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन

संयम व तप की साधना आत्मानुशासन में सहायक : आचार्यश्री महाश्रमण

साहित्य लेखन और कविता सृजन में सिद्धहस्त थी शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी : आचार्यश्री महाश्रमण

मानसा, गांधीनगर (गुजरात)

६ मार्च, २०२३

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का प्रातः लगभग ७ किलोमीटर का विहार कर मानसा स्थित एम०जी० चौधरी विद्या संकुल में पावन प्रवास हुआ।

होली रंगों का उत्सव है। प्रेक्षाध्यान में केंद्रों पर रंगों का ध्यान करके हम आध्यात्मिक होली खेल सकते हैं। आज फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी है। आज से लगभग एक वर्ष पूर्व हमारे धर्मसंघ की शासनमाता अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने दिल्ली में महाप्रयाण किया था। आज उनकी प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि समायोजित है। हम सरल हृदय से उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हैं कि उनकी आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती हुई शीघ्रतय अपने परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करे।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने लगभग ५० वर्षों से अधिक समय तक धर्मसंघ की सेवा की थी। तीन आचार्यों की सन्निधि में रहकर साध्वी समाज की व्यवस्था का दायित्व निर्वहन किया था। आप शांत, सौम्य और समता की प्रतिमूर्ति थी। उन्हें गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने धर्मसंघ में महाश्रमणी, संघ महानिदेशिका और शासनमाता पद पर स्थापित किया था।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की स्मृति करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने आत्मानुशासन की बात बताई है और कहा है—श्रेष्ठ यही है कि मैं अपनी आत्मा का संयम और तप के द्वारा दमन कर दूँ। संयम और तप ये बहुत बड़ी ताकत हैं।



अनेक प्रकार की शक्तियाँ होती हैं, पर उनमें आत्म-शक्ति सर्वोत्तम शक्ति होती है। अंतराय कर्म से अनंत शक्ति उजागर होती है, वह शक्ति सर्वश्रेष्ठ शक्ति होती है। आत्मबल बड़ा ऊँचा बल होता है। उसके अनुपालन के लिए संयम और तप अपेक्षित है।

आत्म अनुशासना में भी संयम और तप की साधना सहायक हो सकती है। अनुशासन दो प्रकार का होता है—स्वानुशासन और परानुशासन। स्वानुशासन के आधार स्तंभ हैं—संयम और तप।

श्रद्धालुओं को आत्मानुशासन के लिए संयम एवं तप की साधना करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि आज फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी है। यह दिन हाजरी, स्मरणा और प्रेरणा का दिन हमारे यहाँ होता है। ऊनोदरी भी एक है। महाप्राण ध्वनि व ध्यान का प्रयोग करवाया। हाजरी

का वाचन करते हुए चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान करवाई। चारित्रात्माओं ने लेख-पत्र का वाचन किया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज से एक वर्ष पूर्व हमारे धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का दिल्ली में महाप्रयाण हो गया था। साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन संस्मरण को विस्तार से समझाया। वे अंतरंग परिषद् की सदस्या थीं। उन्होंने तीन-तीन आचार्यों की सेवा की थी।

अहिंसा यात्रा में भी आप साथ रही थीं। उनका मनोबल बड़ा दृढ़ था। उनकी दक्षिण की यात्रा दो बार हो गई थी। मैंने उन्हें गोहाटी में असाधारण साध्वीप्रमुखा कहा था। भीलवाड़ा चातुर्मास तक उनका स्वास्थ्य लगभग ठीक था। लाडनूं में उनका अमृत महोत्सव भी मनाया था।

अध्यात्म साधना केंद्र, दिल्ली में अंत

समय रखा था। १७ मार्च को उनका महाप्रयाण हो गया था। जितना हो सका उनको आध्यात्मिक सहयोग दिलाया था। तीन पीढ़ियों के साथ उन्होंने काम किया था। हमने उनको लाडनूं में शासनमाता के रूप में स्वीकार किया था।

वे हमारे धर्मसंघ में अनेक रूपों में रही थीं। ऐसी साध्वीप्रमुखा के प्रति मैं सम्मान की भावना अभिव्यक्त करता हूँ। मेरे से वे उम्र में २१ वर्ष और दीक्षा पर्याय में १४ वर्ष बड़ी थीं। साहित्य लेखन एवं कविता सृजन में उनको नैपुण्य प्राप्त था। वे सिद्धहस्त जैसी थीं। अनेक भाषाओं का उनमें वैदुष्य था। अनेक रूपों में उनका योगदान रहा।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज का दिन तेरापंथ का ऐतिहासिक दिवस है। पूज्यप्रवर ने आज के दिन लगभग

४७ किलोमीटर की यात्रा करके साध्वीप्रमुखाश्री जी को दर्शन दिए थे। पूज्यप्रवर का गुरुता का भाव था तो साध्वीप्रमुखाश्रीजी को गुरु के प्रति कैसा समर्पण और विनय का भाव हो। वैसा विराट रूप उनमें था।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि लोग आलोक से शून्य होते हैं, भयभीत होते हैं, कुछ लोग आलोक को जानते भी हैं और उसका सम्यक् उपयोग भी करते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का जीवन आलोकधर्मा, नेतृत्वधर्मा था। उन्होंने अपने जीवन में आलोक का ज्ञान प्राप्त किया। आचार और सद्विचार का आलोक उन्होंने प्राप्त किया। उस आलोक को बिरवाने का प्रयत्न किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी केशर की क्यारी के समान विशिष्ट थीं। प्रबुद्ध साध्वीप्रमुखा थीं। उनका ज्ञान गंभीर था। उनकी लेखनी में प्रबुद्धता थी। उनकी कविताओं में भक्त माधुर्य रस था। उनकी व्यक्तित्व कला भी विशिष्ट थी।

मुनि धर्मरुचि जी, साध्वी सुमतिप्रभा जी, साध्वी मुदितयशा जी एवं समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। साध्वियों द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई।

स्थानीय सभाध्यक्ष अशोक मेहता ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। स्कूल की ओर से बिजु भाई चौधरी एवं पूनमचंद खीमेसरा ने भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल व तेयुप ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत आचार शुद्धि का धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

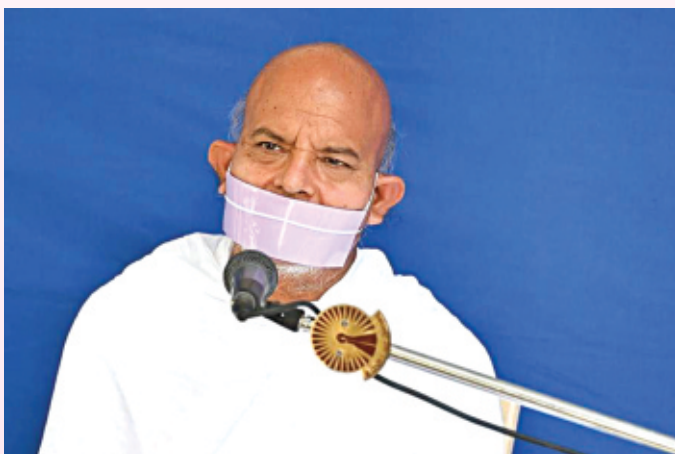
वासन, गांधीनगर (गुजरात) ७ मार्च, २०२३

पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी अहमदाबाद की ओर अग्रसर हैं। मार्ग में गुरुदेव का वासन पधारना हुआ। शांतिदूत ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष चल रहा है। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे अच्छे-अच्छे नियम जीवन में आ जाते हैं तो आदमी का जीवन अच्छा रह सकता है। हमारी यात्रा भी अणुव्रत यात्रा से अभिहित है। मंगलवार को संयम के रूप में रखा जा सकता है।

अणुव्रत संयम की बात बताने वाला, नैतिकता की चेतना को जगाने वाला, अहिंसा का संदेश देने वाला एक उपक्रम है। यह धर्म ग्रंथों, पंथों में पड़ा न रहे बल्कि उसे जीवन में उतारने का प्रयास करें तो आत्मा का कल्याण हो सकता है। कोई भी संप्रदाय हो अणुव्रत कहता है कि धर्म को जीवन में लाएँ। आदमी के भाव में धर्म आ गया तो व्यवहार में आना सुगम है।

गुरुदेव ने फरमाया कि जैसा भाव होता है, वैसा व्यवहार बन सकता है। अणुव्रत आचार शुद्धि लाने वाला धर्म है। आप आस्तिक हो या नास्तिक अणुव्रत को इससे कोई लेना-देना नहीं। आपका आचार-व्यवहार अच्छा होना चाहिए। इंसान पहले इंसान फिर हिंदू या मुसलमान है यही अणुव्रत का संदेश है।

(शेष पृष्ठ २ पर)





शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए क्षमाशील बनें : आचार्यश्री महाश्रमण



प्रांतीज, साबरकांठा (गुजरात),
२ मार्च, २०२३

वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी गुरुवार प्रातः विहार कर प्रांतीज पधारे। पूज्यप्रवर की अमृतवाणी का रसपान करने जैन-जैनेतर अनेक समाज के लोग उपस्थित थे। पूरे प्रांतीजवासियों के मन में महायोगी के पदार्पण से उत्साह की लहर दौड़ रही थी।

युगदृष्टा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रवचन की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में दुर्वृत्तियाँ भी होती हैं तो सुवृत्तियाँ-सद्वृत्तियाँ भी होती हैं। आदमी को गुस्सा आ सकता है, तो क्षमा का भी प्रयास कर सकता है। हमारी चेतना के विकास और शांतिपूर्ण जीवन जीने के

लिए क्षमा एवं सहिष्णुता का महत्त्व है। क्षमा यानी सहिष्णुता, सहन कर लेना।

जब विपरीत स्थिति सामने आती है, तो आदमी का मन उद्वेलित हो जाता है। यदि ऐसी विपरीत स्थिति में आदमी शांति में रहे तो प्रतिकूल स्थिति भी अनुकूल बन सकती है। क्षमा धारण करना अच्छी विशेषता हो जाती है। जिसके पास क्षमारूपी तलवार है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है जहाँ सूखी घास है, वहाँ चिंगारी डालेगे तो आग प्रदीप्त हो सकती है।

उन्होंने फरमाया कि मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं—निम्न श्रेणी, मध्यम श्रेणी और उच्च श्रेणी। श्रेय कार्यों में विघ्न आ सकते हैं। पर उत्तम श्रेणी के लोग विघ्न-बाधाओं में भी प्रसन्नता से आगे बढ़कर अपना कार्य

पूरा करने का प्रयास करते हैं।

शरीर से भी सहन करने का प्रयास हो। जीवन में चलते रहो। साथ मिले तो ठीक अन्यथा अकेले चलते रहना चाहिए। जो अपने आप में रहता है, उसे किसी का डर नहीं रहता। जो बाहर में रहता है, उसे डर लग सकता है। इसे एक प्रसंग से समझाया। हम क्षमा-सहिष्णुता के आश्रय में रहें।

गृहस्थ के जीवन में भी शांति-क्षमा का ज्यादा विकास हो तो अच्छा है। शांति है, तो शांति रह सकती है। आवेश में न आएँ। उत्तर गुजरात में हमारी अणुव्रत यात्रा चल रही है। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे अच्छे नियम जीवन में आते हैं, तो जीवन संवर सकता है। सहन करो, सफल बनो। साधु हो या गृहस्थ जीवन में सहनशीलता रहे। हम क्षमा जैसे गुणों का विकास कर उन्हें आत्मसात करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि शब्दकोश में दो शब्द महत्त्वपूर्ण हैं—गुरु और परमात्मा। हमारा लक्ष्य है, परमात्मा बनना, परमात्मा तक पहुँचना। परमात्मा को पाने के लिए हमारे मार्गदर्शक हमारे गुरु बनते हैं। गुरु भी दो प्रकार के होते हैं—लौकिक गुरु और लोकोत्तर गुरु। लोकोत्तर गुरु निःस्पृहता के साथ अपना जीवन चलाते हैं और दूसरों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

♦ संप्रदाय के व्यामोह में फँसकर सत्य से दूर जाना तुच्छ बात होती है। वीतरागता की साधना के लिए संप्रदाय आत्यंतिक नहीं, सहायक साधन होता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

मनुष्य की इच्छाओं का परिसीमन जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

महुडी, गांधीनगर (गुजरात) ३ मार्च, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः प्रसिद्ध जैन तीर्थ महुडी में पधारे। महुडी घंटाकर्ण महावीर का स्थान है। आचार्य बुद्धिसागरजी द्वारा स्थापित जैन मंदिर में भी पूज्यप्रवर पधारे। मूर्तिपूजन साध्वियों ने भी आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की।

महुडी में आध्यात्मिक सूखड़ी परोसते हुए वर्तमान के महावीर ने फरमाया कि आदमी के भीतर इच्छाएँ होती हैं। वीतराग पुरुष तो निरांशु हो जाते हैं। विशिष्ट मुनि तो निस्पृह अवस्था में चले जाते हैं। परंतु सामान्य आदमी इच्छाशील होता है।

इच्छा दो प्रकार की होती हैं—सद्-इच्छा और दुरिच्छा। तीसरा प्रकार मानें तो सामान्य इच्छा हो जाती है। आदमी सद्-इच्छा करे कि मेरा आध्यात्मिक विकास हो। तप-साधना करे, आध्यात्मिक सेवा करे, प्रमाद में न रहे। साधु हो तो साधुपन और श्रावक हो तो श्रावकपन अच्छा बना रहे।

आदमी दुरिच्छा न करे, अमंगल कामना न करे। इन सबसे बचने का प्रयास करे। लोभ की चेतना जागृत होने पर आदमी लुप्त बन जाता है, उसे सोना-चाँदी मिल जाए तो भी और चाहिए, कामना बनी रहती है। इच्छा आकाश के समान अनंत है। इच्छा का कोई पार नहीं है।

मूढ़-मोहग्रस्त आदमी में असंतोष रहता है। पंडित, ज्ञानी, विवेक संपन्न होता है, वह संतोष धारण कर लेता है। असंतोष का पार नहीं, संतोष परम सुखदायक होता है। पूज्यप्रवर ने बाव क्षेत्र के साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को वर्षीतप के प्रत्याख्यान करवाए। शारीरिक अनुकूलता हो जाए तो वर्षीतप अच्छा अनुष्ठान है।

गुरुदेव ने फरमाया कि आदमी भौतिक इच्छा पर नियंत्रण रखे और इच्छा को मोड़ दे। दुरिच्छा न रहे। शुभेच्छा रहे। अच्छे रूप में महत्त्वकांक्षा रखे। इच्छा का परिसंयम अच्छी बात है। आज हम जैन समाज से जुड़े स्थान में आए हैं। तीर्थंकर से बड़ा कोई अध्यात्म का अधिकृत प्रवक्ता नहीं होता है। दया के लिए तीर्थंकर प्रवचन करते हैं। हम वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ें।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत और आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेक्षाध्यान के माध्यम से जनकल्याण का कार्य किया था। हमारी साधना की इच्छा बढ़ती रहे और संवर की साधना का विकास हो। संवरयुक्त निर्जरा हो। इच्छाओं का परिसीमन और परिष्कार करने का प्रयास करें।

मुनि निकुंज कुमार जी, मुनि मार्दव कुमार जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर के सामने नई-नई परिषद् रहती हैं। अनेक वर्गों के लोग पूज्यप्रवर के दर्शन करते हैं। आज पूज्यप्रवर की सन्निधि में वर्षीतप साधक आए हैं। वर्षीतप से अपने आप में आह्लाद की अनुभूति होती है। जैन परंपरा में तपस्या को महत्त्व दिया गया है। तपस्या के दो प्रकार हैं—बाह्य और आभ्यंतर तप।

मुनि निकुंज कुमार जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर के स्वागत में महुडी तीर्थ की ओर से नीलेश भाई मेहता, भूपेंद्र भाई बोहरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से महुडी तीर्थ के न्यासियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत आवार शुद्धि का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जीवन में दो चीजें आ जाएँ—चोरी नहीं करना झूठ नहीं बोलना तो मानना चाहिए कि जीवन में ईमानदारी आई है। सच्चाई-अच्छाई कहीं से भी मिल जाए, ले लेना चाहिए। अणुव्रत सांप्रदायिक उन्माद को नहीं मानता। संप्रदाय छिलके के समान है, धर्म उसका मूल गुदा है। संप्रदाय तो सुरक्षा के लिए है।

आत्मा का महत्त्व ज्यादा है। शरीर तो एक दिन खत्म होने वाला है। आत्मा तो शाश्वत है। किसी कारण संप्रदाय भले छूट जाए पर धर्म को मत छोड़ो। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। कर्म स्थान में भी धर्म रहना चाहिए। धर्म स्थान में भी अपने ढंग से रहें। धर्म आदमी के जीवन में, आचरणों में आए। मंगलवार संयम दिवस है, सबके जीवन में संयम रहे।

आज यहाँ वासन विद्या मंदिर में आए हैं। विद्यार्थियों को अणुव्रत, नैतिकता, संयम की प्रेरणा मिलती रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अधिकार अहंकार न बने, उपहार बने : आचार्यश्री महाश्रमण

सलाल साबरकांठा (गुजरात),
१ मार्च, २०२३

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर सलाल पधारे। परमपूज्य ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर ममत्व की चेतना भी होती है। वीतराग पुरुष या विशेष साधक को छोड़कर कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में, हर मनुष्य की चेतना में ममत्व का भाव रहता है।

जहाँ मोह मूर्च्छा होती है, वहाँ परिग्रह हो जाता है। हिंसा का कारण परिग्रह बन सकता है। प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में वृत्ति काम करती है। कारण रूप में वृत्ति होती है, फिर कार्य रूप में प्रवृत्ति होती है। जैसे अहिंसा को परम धर्म कहा गया है, वैसे अपरिग्रह को भी परम धर्म कहा जा सकता है।

गुरुदेव ने कहा कि सामान्य आदमी में ममत्व की भावना सघन न हो, प्रतनू रहे। शरीर के प्रति भी मोह भाव नहीं रहे।

अहंकार और ममकार जब उग्र रूप में हो जाते हैं, तो ये आदमी की चेतना को विकृत बनाने वाले बन सकते हैं। मनुष्य को धन, ज्ञान या सत्ता का घमंड नहीं करना चाहिए। विद्या विनय से शोभित होती है। सत्ता सेवा के लिए होती है, अधिकार का दुरुपयोग न हो। अधिकार अहंकार न बने, उपहार बने।

इसी तरह से आदमी रूप का भी घमंड न करे। चेहरे का ज्यादा महत्त्व नहीं है। ज्यादा महत्त्व चरित्र-साधना का है। एक प्रसंग के माध्यम से समझाया कि चेहरा बदलना मुश्किल है, पर ज्ञान-चारित्र्य अच्छा रहे। शरीर और आत्मा अलग है। शरीर अशाश्वत है। आत्मा शाश्वत है, वह अच्छी रहे। गृहस्थ के जीवन में आत्मा में सद्भावना, नैतिकता, रहे तो आत्मा अच्छी रह सकती है।

आज सलाल आए हैं। यहाँ की जनता में भी खूब अच्छी भावना बनी रहे। अणुव्रत यात्रा चल रही है। अगर अणुव्रत के

छोटे-छोटे नियम जीवन में आएँ तो जिंदगी अच्छी रह सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हिंदुस्तान में दो परंपराएँ विकसित हुईं—वैदिक परंपरा व श्रमण परंपरा। वैदिक परंपरा में तीर्थयात्रा का महत्त्व है। श्रमण परंपरा में भी कुछ लोग तीर्थ यात्रा करते हैं। तेरापथ की परंपरा को मानने वालों के लिए तो तीर्थ वहीं होता है, जहाँ उनके गुरु होते हैं। गुरु दर्शन का मतलब है कि उन्होंने तीर्थ क्षेत्र में अवगाहन कर लिया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेरापथ सभाध्यक्ष मिश्रीलाल चोरड़िया, दिगंबर समाज से दिनेशभाई गांधी, स्थानकवासी समाज से पंकज बणवट, अखिल भारतीय संत समिति से महंत सुनीलदास जी, टीपीएफ महामंत्री विमलशाह, तपस्वी जैन, महिला मंडल अध्यक्षा ललीता श्रीश्रीमाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम पुण्यतिथि पर उद्गार

अहम्

● साध्वी शरदयशा ●

नयनों के मोती पूछ रहे
हे सुधामयी! तुम कहाँ गई?
प्राणों के पंछी ढूँढ़ रहे,
शासनमाता! तुम कहाँ गई?

गंगा की निर्मल धारा सम
सबको पावन करती पल-पल।
पीकर घट-घट के अधियारे,
तुम स्वयं बनी शाश्वत उज्ज्वल।
समता के दीप जला करके,
तुम कहाँ गई, तुम कहाँ गई?

कितनी कलियों को वत्सलता से
सिंचन देकर विकसाया।
मुरझाते पौधों को बयार,
वासंती बनकर दुलराया।
सुरभित करके गण उपवन को
तुम कहाँ गई, तुम कहाँ गई?।।

सौ-सौ आँखों से सदा अरे!
तुम पीर देखती थी पर की।
मुस्कान एक मधुमय तेरी
हर व्यथा मिटाती अंतर की।
मृदु आश्वासन का खोल खजाना
कहाँ गई तुम कहाँ गई?।।

जहमत के बादल जब छाते,
रहमत की आँधी बन जाती।
मुश्किल चाहे जितनी आए
साहस की राहें दिखलाती।
श्रद्धा-संजीवन-पान करा
तुम कहाँ गई तुम कहाँ गई?।।

हाथों में थाम कलम पैनी
शब्दों के चित्र सजाती थी
भावों को बाँध छंद-लय में
श्रुत की रसधारा बहाती थी
गढ़ शब्द शिल्पियों की जमात
तुम कहाँ गई तुम कहाँ गई?।।

◆ भावक्रिया, प्रतिक्रियाविरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण—
प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के ये पाँच सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो
स्वस्थ जीवनशैली के महत्वपूर्ण सूत्र हस्तगत हो जाते हैं।

◆ व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र
होना भावक्रिया है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

नमन करें उस दिव्यात्मा को

● साध्वी मधुलता ●

शासनमाता ने जीवन भर जो वत्सलता बरसाई,
हमने अभिनव ऊर्जा पाई।
नई क्रांति की लहर उठी, दी गण को नभ-सी ऊँचाई
तुम तेरापंथ की तरुणाई।।

पाँच दशक शासन सेवा के रहे उत्तरोत्तर उत्तम,
प्रगतिशील साध्वीगण को नेतृत्व मिला था सर्वोत्तम।
खुले रोशनी के वातायन, प्रतिभा में स्फुरणा आई।।

विनय, विवेक, बौद्धिकता, श्रद्धा का दुर्लभ संयोग मिला,
भाग्य और पुरुषार्थ समन्वित जीवन का उद्यान खिला।
एक निष्ठ गुरु भक्ति विलक्षण, व्यवहारों में गहराई।।

तुलसी युग में गढ़े नए प्रतिमान, नया इतिहास लिखा,
महाप्रज्ञयुग की तुम प्रज्ञामयी प्रखरतम दीपशिखा।
विजयी शासन महाश्रमण का, कीर्ति-पताका फहराई।।

युगप्रधान श्री महाश्रमण ने सर्वाधिक सम्मान दिया,
अमृत महोत्सव पर, 'शासनमाता' को पट्टासीन किया।
उग्रविहारी बने, दिए दर्शन, नव रचना दिखलाई।।

नमन करें उस दिव्यात्मा को, पल-पल पावन स्मरण करें,
विनयांजलियाँ करें समर्पित, कदमों का अनुसरण करें।
'अमृतमयी माँ' तुम बिन मन की पुष्प वाटिका मुरझाई।।

लय : जागो बहनों नव प्रभात----

जय शासनमाता कनकप्रभा

● शासन गौरव साध्वी कनकश्री ●

जय शासनमाता कनकप्रभा, गण में रंगराता कनकप्रभा,
दी जीवनभर सबको साता, जन-मनहारी व्यक्तित्व विभा।
वात्सल्यमयी कारुण्यमयी SSS साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा।।

वैराग्यमयी विज्ञानमयी, आनंदमयी आलोकमयी,
तप-जप-श्रुत आराधन निरता, पावन निर्झरणी सुधामयी।
समता-ममता की मूरत माँ! साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा।।

श्री पौरुष की पर्याय विरल स्वर्णाभ साधनामय हर पल,
संयम जीवन का विरतिचार गंगा की धारा-सा निर्मलत्व।
अनुशासन में भी अनुकंपा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा।।

दी तीन-तीन आचार्यों के, शासन में अद्भुत सेवाएँ,
बौद्धिकता विनयशीलता से, अंकित की सुंदर रेखाएँ।
बेजोड़ प्रबंधन पटुता थी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा।।

सीख अबोली मिलती थी, सतियाँ मेहनत सब करो कड़ी,
यदि प्रगति शिखर को छूना है, हो सोच विधायक और बड़ी।
स्वर-स्वर में गूँजे यश गाथा, जय साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

महामहिम श्री महाश्रमण, दौड़े आए दर्शन देने,
पल-पल आध्यात्मिक साज दिया, भव सागर ने नौका खेने।
था परम समाधि में तन त्याग, जय शासनमाता कनकप्रभा।।

लय : बो महाराणा प्रताप कठै---

अहम्

● साध्वी प्रमिला कुमारी ●

शासनमाता तेरी, महिमा सबसे न्यारी।
हर इक दिल में बसी, वो मूरत मनहारी।।

शासन को यों संवारा, नव चिंतन से सजाया,
तेरी विनम्रता ने, विश्वास दीप जलाया।
गुरु के हर इंगित पर, खिल जाती मन क्यारी।।

नेतृत्व शैली तेरी, थी अनुपम और निराली,
नारी शक्ति की धड़कन, तेरे चरणों सदा दिवाली।
तेरी नेह भरी नजरें, लगती सबको प्यारी।।

महाश्रमणी जीवन गाथा, गुण गौरव गीत गाएँ,
श्रम सेवा की कहानी, सदियों तक भूल न पाएँ।
संस्कारों की घूँटी, संपोषण हितकारी।।

पाथेय प्रेरणा का, हर शख्स को दिलाती,
मीठी मृदु वाणी से, अमृत पान कराती।
जन-जन की पीर हरी, समभावी धृतिधारी।।

है मन की यही मुरादे, पदचिह्नों पर बढ़ेंगे,
तेरी शिव शिक्षा को, जीवन में वरण करेंगे।
नतमस्तक सारा जहाँ, सब जाते बलिहारी।।

तेरे दर्शन खातिर तरसे, अंखियाँ हमारी प्यारी,
इक बार झलक दिखला दो, सारी दुनिया अभिलाषी।
पावन आभामंडल, था कितना सुखकारी।।

तीन-तीन गुरुओं को, निश्चिंत तुमने बनाया,
साध्वी गण का गौरव, शिखरों पर चढ़ाया।
महाश्रमण भी याद करे, बीती घड़ियाँ सारी।।
(गुरुवर भी याद करे, बीती घड़ियाँ सारी)।

लय : तेरे जैसा यार कहाँ----

सफर बड़ा ही सुहाना

● साध्वी मनीषाप्रभा ●

पचास साल का लंबा सफर बड़ा ही सुहाना।
इंद्रधनुषी व्यक्तित्व से सजा अद्वितीय अफसाना।।

साध्वीप्रमुखा की पुण्यतिथि मनाना क्या वाजिब?
हमारे दिलों पर राज करने वाली वह गालिब हो
सुगंधित जीवन की फूलों में गुलाब हो
एक साल क्या हजारों साल याद करेगा सारा जमाना।।१।।

रोम रोम में संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा की तुम पहचान
गुणों का संक्रमण हो यही सच्चा हमारा सम्मान
जौँगे संघ में, मरेंगे संघ में, यही भीतर संगान
तेरे चरणकमल में आने वालों को मिलता भवोदधि किनारा।।२।।

जिनशासन भैक्षवशासन की तुम अद्भुत पारिजात
'शासनमाता' के संबोध धन्य बना जीवन आख्यात
श्री महाश्रमण का शासन बना जग विख्यात
प्रथम पुण्यतिथि पर अर्पित शुभ भावों का जराना।।३।।



महिला मंडल के विविध आयोजन



'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यक्रम

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, चेन्नई के तत्वावधान में निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' की पाँचवीं एवं छठी कार्यशाला का आयोजन पट्टालम जैन विद्यालय में छठी क्लास के 99५ बच्चों के साथ किया गया। 'बुजुर्गों की सेवा' एवं 'सत्संगति' विषय पर कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत महिला मंडल द्वारा हुआ। महाप्राण ध्वनि एवं संकल्प का प्रयोग करवाया, एकाग्रता बढ़ाने के लिए अनिमेष अनुप्रेक्षा प्रयोग करवाया एवं लाभ बताए गए। महिला मंडल द्वारा सत्संगति के बारे में महापुरुषों की घटनाओं एवं कहानी के माध्यम से संयोजिका सुभद्रा लुणावत ने इंग्लिश में एवं संयोजिका गुणवंती खाटेड ने तमिल में प्रशिक्षण दिया। मोबाइल फोन को कम यूज करने के लिए प्रेरणास्पद नाटक किया गया। बड़े बुजुर्गों की सेवा के बारे में कहानी एवं विशेष प्रशिक्षण सुभद्रा लुणावत एवं मनाली गोलेच्छा ने दिया।

समसामायिक विषय 'पान गुटखा आदि नशा करने पर नुकसान होता है' इस विषय पर बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया। 'जंक फूड छोड़ो, हेल्थी फूड अपनाओ' विषय पर एक सुंदर स्किट बच्चों ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री रीमा सिंघवी ने दिया। कार्यसमिति सदस्य सरोज चिप्यड़ की उपस्थिति रही। निर्माण प्रोजेक्ट के प्रायोजक दिलीप कुमार नितेश कुमार गोलेच्छा की तरफ से बच्चों को गिफ्ट प्रदान करवाया गया।

'मंजिलें' कार्यशाला का आयोजन

कांकरोली।

अभातेमम के तत्वावधान में तेमम, कांकरोली ने मंजिलें Reach the Unreached कार्यशाला का आयोजन डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में और अभातेयुमम की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया की अध्यक्षता में प्रज्ञा विहार प्रांगण में किया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ में साध्वी डॉ० परमयशा जी ने नमस्कार महामंत्र का श्रवण करवाया। कांकरोली महिला मंडल की बहनों ने महाश्रमण अष्टकम् से मंगलाचरण करके वातावरण को मंगलमय बना दिया।

मंडल अध्यक्ष इंद्रा पगारिया ने राष्ट्रीय

अध्यक्षा नीलम सेठिया एवं आगंतुक सभी अतिथिगण का स्वागत अभिनंदन किया। मंडल की बहनों ने अपना श्रम और समय लगाकर महिला मंडल का लोगो मानव श्रृंखला में बनाकर सभी अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यशाला में मेवाड़ प्रभारी डॉ० नीना कावड़िया, महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया, राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष कल्पना बैद और राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने मंजिलें कार्यशाला पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति की।

कार्यशाला में तेमम की बहनों ने लघु नाटिका के माध्यम से सबको आह्वान किया कि नो लेदर, नो फेदर एंड नो फर का संकल्प हो।

साध्वीवृंद ने गीत के माध्यम से उपस्थित जनमेदिनी को आह्वान किया कि आकाश की तरह विशाल लक्ष्य बनाएँ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि आकाश की तरह विराट विशाल लक्ष्य का निर्धारण करें। स्त्रीच्युअल रूल्स से आत्म साम्राज्य के मालिक बनें। बारह ब्रतों की आराधना, चौदह नियमों का पारायण, त्याग-प्रत्याख्यान से जीवनशैली को सर्वोत्तम बनाएँ। बैंक बैलेंस जितना जरूरी है, उससे ज्यादा जरूरी है ब्रेन बैलेंस रखना।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी ने सभी राष्ट्रीय अध्यक्षा का स्वागत किया। मंडल मंत्री मनीषा कच्छारा ने कार्यशाला का संचालन किया। कांकरोली सभा के मंत्री विनोद चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष निखिल कच्छारा, मंत्री दिव्यांश कच्छारा, टीपीएफ अध्यक्ष आर०के० जैन के साथ अच्छी संख्या में मंडल की बहनों ने उपस्थिति दर्ज करवाकर कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

अनावश्यक ना बोलना भी मौन की उत्तम साधना

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में न्यू तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी और शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ साइलेंस' कार्यशाला आयोजित की गई। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि जितने कम शब्दों में हमारा काम हो सके उतने कम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हमें बहुत बोलना नहीं चाहिए।

हमारी वाणी में माधुर्य और भाषा ऊँची होनी चाहिए। कई उदाहरणों के माध्यम से कम बोलना और ज्यादा बोलने का महत्त्व बताया।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा कि अनेक प्रयोग जैन दर्शन में बताए गए हैं किंतु उसमें सबसे सरल उपक्रम है—मौन। मौन ऐसा उपक्रम है जिसमें खाना-पीना सब कुछ चलता है, किंतु फिर भी सबके लिए मौन रहना सरल नहीं है। हमें अंतर्धान से मौन करना चाहिए।

साध्वी शताब्दी प्रभा जी ने कहा कि मौन एक अच्छी साधना है जहाँ आवश्यक हो वही बोलें। हमें जरूरत से ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। अनावश्यक ना बोलना भी मौन है। अभातेमम सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा ने मौन पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर परामर्शक लुणीदेवी गोलेछा, पीपी देवी ओस्तवाल, नारायणी देवी छाजेड़, उपाध्यक्ष रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग 900 बहनें उपस्थित थीं। इस अवसर पर घाति-अघाति प्रतियोगिता में प्रथम मुस्कान वेद मेहता, द्वितीय पिकी सालेचा, तृतीय ममता ओस्तवाल को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

कालू तत्व शतक द्वितीय खंड पर आधारित बोर्ड गेम का आयोजन

राजारजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित कालू तत्व शतक द्वितीय खंड पर आधारित बोर्ड गेम का आयोजन तेमम आर०आर० नगर द्वारा किया गया। मंगलाचरण मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से हुआ। सभी का स्वागत अध्यक्ष लता बाफना ने किया। अच्छी संख्या में उपस्थित मंडल की बहनों ने 99 बहनों ने इस रोचक प्रतियोगिता में हर उम्र की बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

बोर्ड गेम को सुव्यवस्थित रूप से प्रवक्ता उपासिका कंचन छाजेड़ ने खिलवाया। इस प्रतियोगिता में प्रस्थित स्थान पर रही सुशीलाबाई एवं सरोज दस्सानी, द्वितीय स्थान पर शोभा बोथरा, तृतीय स्थान पर नीतू बाफना रही। प्रथम वर्ग की विजेता बहनों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सपना तातेड़ ने किया। आभार सहमंत्री वंदना भंसाली ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस व प्रेरणा सम्मान समारोह उर्मी का आयोजन

कांदिवली।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, मुंबई द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर उर्मी का आयोजन कांदिवली तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

प्रथम सत्र 'उड़ान सपनों की' का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति मालाड़ महिला मंडल द्वारा दी गई। शासनमाता के प्रति अभ्यर्थना भांडुप, चेंबूर, सायन, कोलीवाड़ा, कोपरी, मीरा रोड व भिवंडी महिला मंडल द्वारा दी गई।

अध्यक्षा रचना हिरण ने अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ सभी का स्वागत किया। पूनम परमार व श्रुति गोखरू ने दोनों मुख्य वक्ताओं का परिचय दिया।

मुख्य वक्ता सुरेखा पुनमिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिलाओं को अपने घर एवं काम को कैसे मैनेज करना चाहिए इसके टिप्स दिए।

मुख्य वक्ता प्रीति कुचेरिया ने अपने वक्तव्य में बिजनेस में ग्रोथ को कैसे बढ़ाना चाहिए, इसके टिप्स दिए और बहनों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रीति ने कहा कि कुछ भी करने के लिए उम्र मायने नहीं रखती, आपका जज्बा ही आपको मंजिल तक पहुँचाता है।

साध्वीवृंद द्वारा सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। शुभकामनाओं के स्वर में चातुर्मास समिति अध्यक्ष मदन तातेड़, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा, आयोजन के प्रायोजक बी०सी० भालावत ने अपने विचार रखे।

द्वितीय सत्र 'कर्तव्य का सम्मान' में टी०बी०डब्ल्यू०एन० की टीम द्वारा विकास की वर्णमाला पर प्रस्तुति दी गई। महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया ने एवं पूर्वाध्यक्ष भारती सेठिया ने प्रेरणा सम्मान का वाचन किया।

इसी क्रम में तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई द्वारा धर्मसंघ में अमूल्य योगदान व सेवाएँ देने के लिए प्रेरणा पुरस्कार से पूर्वाध्यक्ष प्रकाश देवी तातेड़ को सम्मानित किया गया।

अभातेमम के तत्वावधान में मुंबई महिला मंडल द्वारा इंडियन नेवी सर्जन डॉ० रूबी चट्टोपाध्याय को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ० रूबी का परिचय अभातेमम कार्यसमिति सदस्य तरुणा बोहरा ने दिया। डॉ० रूबी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि कुछ वर्षों पहले महिलाओं को अबला, कायर, भीरु जैसी उपमा दी जाती थी, महिलाएँ चूल्हे-चौके में अपना सारा जीवन व्यतीत कर देती थी। आज समाज व देश की तस्वीर बदल चुकी है। आज की महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं।

कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेंद्र कोठारी, अणुव्रत समिति, मुंबई से कंचन सोनी, कांदिवली सभा अध्यक्ष पारस दुगड़ एवं उनकी टीम, कांदिवली परिषद् से अशोक हिरण, प्रीतम हिरण, अभातेमम से परामर्शक शांता पुगलिया, मुंबई महिला मंडल से पूर्वाध्यक्ष कमला जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अलका मेहता व सहमंत्री संगीता चपलोट ने किया। आभार ज्ञापन सारिका बाफना ने किया।

कार्यक्रम के प्रायोजक आशादेवी बालचंद भलावत का सम्मान मुंबई महिला मंडल द्वारा किया गया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन का सहयोग मिला। कार्यक्रम में लगभग 800 बहनों ने सहभागिता दर्ज कराई।

शिल्पशाला का आयोजन

राजारजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित द पावर ऑफ साइलेंस विषय पर आर०आर० नगर महिला मंडल द्वारा शिल्पशाला का आयोजन किया गया। शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा तुलसी अष्टकम् के सामूहिक संगान से किया गया।

हेमलता सुराना, शारदा बैद ने विषय पर सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि साइलेंस के मर्म समझकर हमें अपना अंतर्जागरण करने का प्रयास करना चाहिए। मुख्य वक्ता प्रवक्ता उपासिका विजयलक्ष्मी सुराणा ने उदाहरणों के द्वारा समझाया कि साइलेंस क्या है? क्यों करना चाहिए और करने से क्या लाभ प्राप्त होते हैं। जैसे स्मरण शक्ति बढ़ती है तनाव दूर होता है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है। मन शांत रहता है, जिससे अनावश्यक विचार मन में नहीं आते हैं। साइलेंस मनुष्य की ही नहीं संपूर्ण प्रकृति की अमोघ शक्ति है।

शिल्पशाला का संयोजन ममता दुगड़ ने किया। धन्यवाद मंजु बोथरा ने किया। अच्छी संख्या में बहनें उपस्थित थीं।

♦ बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतरी आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।

—आचार्यश्री महाश्रमण

5



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

13 - 19 मार्च, 2023

संतोष देवी महनोत बनी संथारा साधिका

दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने उदासर निवासी हंसराज महनोत की धर्मपत्नी संतोष देवी महनोत शास्त्रीनगर प्रवासी को आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञानुसार पारिवारिक सामाजिक सदस्यों की सहमति से तिबिहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया जो कुछ मिनटों में ही सीज गया। परिवार के सदस्यों के अलावा समाज के भाई-बहनों का बहुत अच्छा सहयोग मिला, जिससे पूरी रात नवकार महामंत्र का जाप एवं गीतिकाओं का क्रम बैकुंठी यात्रा से पूर्व तक व्यवस्थित चला।

उनकी स्मृति सभा दूसरे दिन प्रेम सुखधाम एस०एस० जैन सभा में मुनि कमल कुमार जी की सन्निधि में रखी गई, जिसमें स्थानकवासी डॉ० आचार्य शिवमुनि के आज्ञानुवर्ती पारस मुनि आदि का भी सहज योग मिला।

मुनि कमल कुमार जी ने स्वरचित दोहों के माध्यम से अपने विचार प्रकट करते हुए लोग्स का सामूहिक ध्यान करवाया, पारिवारिक सदस्यों ने उनकी स्मृति में मुनिश्री से विविध प्रकार के प्रत्याख्यान किए उनकी सुपुत्री ने अपनी माताजी का परिचय दिया, प्रवचनोपरांत पूज्यप्रवर का संदेश भी प्राप्त हुआ, जिसे पवन जी चौपड़ा ने सुनाया।

साध्वीवृंद का आध्यात्मिक मिलन

कुर्ला (मुंबई)।

साध्वी निर्वाणश्री जी व साध्वी प्रज्ञाश्री जी का आध्यात्मिक संगम उल्लासमय रहा। कुर्ला तेरापंथ भवन में आयोजित स्वागत समारोह में साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आज साध्वियों को देखकर मन अत्यंत प्रसन्न हो रहा है। साध्वीश्री जी कर्मठता की पर्याय हैं। मुंबई में परिभ्रमण कर ये दर्शन, ज्ञान, चारित्र्य व तप की अलख जगा रही हैं।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि संतों

के मिलन का रंग निराला होता है। मैं कल से देख रही हूँ कि आप हम छोटी-छोटी साध्वियों पर कितना वात्सल्य बरसा रही हैं। साध्वी निर्वाणश्री जी के चरणों में आकर मैं अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति कर रही हूँ। साध्वी सरलप्रभा जी ने 'अतिथि देवो भवः' की घटना के साथ श्रावक वर्ग को प्रेरणा से झकझोर दिया।

प्रबुद्ध साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आंतरिक उल्लास की अभिव्यक्ति है आज का मिलन। खुशियों

के ये पल सबमें नई ऊर्जा भरते हैं। साध्वी विनयप्रभा जी व साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने गीत की स्वरलहरियों से भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वीवृंद ने गीत प्रस्तुत किया। तेयुप के सदस्यों ने गीत के बोलों से स्वागत किया। तेरापंथी सभा की ओर से अध्यक्ष कांतिलाल कोठारी, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र कोठारी ने साध्वीवृंद का भावभरा स्वागत किया। मंच संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कुशलता से किया।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

सूरत।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा प्रशिक्षक टीम, सूरत द्वारा तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित की गई। सूरत के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण कर रहे संतों एवं साध्वियों की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से अनेक किशोर एवं युवावय के प्रतिभागियों सहित 900 से अधिक लोगों ने उत्साहपूर्वक कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला प्रेक्षा गीत के संगान के साथ

प्रारंभ हुई। उद्घाटन सत्र में साध्वीवृंद ने अपने उद्बोधन में प्रेक्षाध्यान के बारे में विस्तार से बताया। साध्वीश्री जी ने प्रेक्षा चर्या के पाँच सूत्रों—भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार एवं मित्भाषण के बारे में बताते हुए इनके पालन की प्रेरणा दी। दोपहर में साध्वीश्री जी ने ध्यान का प्रयोग भी करवाया। इसके अलावा कुशल एवं अनुभवी प्रशिक्षकों ने योगासन, प्राणायाम, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, समताल श्वास प्रेक्षा, संपूर्ण कायोत्सर्ग, मंगलभावना आदि विविध प्रयोग करवाए।

प्रयोगों के सैद्धांतिक पक्ष का प्रशिक्षण तथा संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान कई सत्रों में किया गया। प्रेक्षा फाउंडेशन के विविध उपक्रमों के बारे में जानकारी दी गई। अनेक व्यक्तियों ने लाडलू तथा अहमदाबाद में आयोजित होने वाले शिविरों तथा ऑनलाइन, ऑफलाइन प्रायोगिक कक्षाओं एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से जुड़ने का संकल्प व्यक्त किया।

प्रशिक्षकों की टीम, कार्यकर्ताओं एवं भवन के कर्मचारियों का श्रम सार्थक हुआ।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडलू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोधरा, छपर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

चेन्नई।

नागौर निवासी, चेन्नई प्रवासी विमलेश डागा सुपुत्र प्रसन्नचंद डागा का शुभ विवाह सौभाग्यवती सपना कुमारी सुपुत्री संतोषचंद पोकरणा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक स्वरूपचंद दांती, मांगीलाल पितलिया, हनुमान सुखलेचा, रोशन बोधरा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपन्न करवाया।

डॉ० दीपक सुराणा ने संस्कारकों का परिवार की ओर से साधुवाद दिया। पाणिग्रहण संस्कार की समायोजना में गौतमचंद समदड़िया का योगदान रहा।

राजाजीनगर।

बैंगलुरु निवासी संपतराज बम्ब के सुपुत्र मनोज कुमार बम्ब एवं बैंगलुरु निवासी ढगलचंद कुंकूलोर की सुपुत्री सौभाग्यवती निशा कुंकूलोर का विवाह संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ एवं अरविंद दुगड़ ने नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से संपन्न करवाया।

परिषद् परिवार द्वारा प्रमाण-पत्र एवं मंगलभावना यंत्र वर-वधू को प्रदान किया गया। तेयुप राजाजीनगर सदस्य मनोज सिसोदिया एवं राकेश सिसोदिया का विशेष सहयोग रहा।

जसोल।

अमन चोपड़ा सुपुत्र कविता देवी-महेंद्र चोपड़ा, जसोल का शुभ विवाह जैन विधि से दिव्या सुपुत्री पुष्पा-महेंद्र श्रीश्रीमाल, बालोतरा के साथ मुख्य संस्कारक बसंत सोनी मंडिया पाली मारवाड़ ने पूरे विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

दोनों परिवारों को मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। मंगलपाठ मुमुक्षु आयुषी ने प्रस्तुत किया। दोनों परिवार के सदस्यों ने संस्कारक तथा तेयुप अध्यक्ष का सम्मान किया।

सरदारपुरा।

देवेश सालेचा सुपुत्र उषा-नरेश सालेचा, जोधपुर का शुभ विवाह जैन संस्कार विधि से वृद्धि सुपुत्री लता श्रेयांस डागा जोधपुर के साथ मुख्य संस्कारक बसंत सोनी मंडिया पाली मारवाड़ ने पूरे विधि-विधान मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

दोनों परिवार को मंगलभावना पत्र भेंट किया और त्याग प्रत्याख्यान करवाया। दोनों परिवार के सदस्यों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

हैदराबाद।

प्रकाश जिनेंद्र बैद, हाईटेक सिटी हैदराबाद प्रवासी के यहाँ नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। तेयुप के संस्कारक आशीष दक ने जैन पद्धति से जैन मंत्रोच्चार से पारिवारिकजनों की उपस्थिति में गृह प्रवेश कार्यक्रम संपन्न करवाया।

प्रकाश जिनेंद्र बैद को जैन संस्कारकों को बहुमान देने के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

जयपुर।

प्रमिला-महावीर जैन के नूतन गृह प्रवेश संस्कारक श्रेयांस बैंगानी व सौरभ बैंगानी ने कार्यक्रम के संयोजक कुलदीप बैद की उपस्थिति में मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी रेणु-अशोक बाफना के सुपुत्र एवं पुत्रवधू अभिषेक जयश्री बाफना ने नवजात पुत्री-रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित किया।

कार्यक्रम में जैन संस्कारक पीयूष लुणिया, भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण संस्कार संपन्न करवाया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।



मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



वैराग्य ज्ञानयोग का ही प्रकार है। आत्मज्ञान की निर्मलता वैराग्य का रूप ले लेती है। कोई भी आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो आत्मज्ञानी नहीं है और विरक्त है। ऐसा भी कोई आदमी नहीं हो सकता जो विरक्त नहीं है और आत्मज्ञानी है। जो आत्मज्ञानी होगा वह विरक्त होगा और जो विरक्त होगा वह आत्मज्ञानी होगा, यह निश्चित व्याप्ति है।

आत्मज्ञान के दो हेतु हैं—निसर्ग और अधिगम। कुछ लोग निसर्ग से ही आत्मज्ञानी होते हैं। अधिगम का अर्थ है गुरु का उपदेश। गुरु के उपदेश से आत्मज्ञान प्राप्त करने वाले नैसर्गिक आत्मज्ञानी की अपेक्षा अधिक होते हैं। नैसर्गिक आत्मज्ञानी ज्ञान के द्वारा मानसिक एकाग्रता प्राप्त करते हैं किंतु गुरु के उपदेश से आत्मज्ञान की दिशा में चलने वाले श्रद्धा के प्रकर्ष से मानसिक एकाग्रता साध लेते हैं। श्रद्धा के प्रकर्ष में विश्वास केंद्रित हो जाता है और मन की तरलता सघनता में बदल जाती है।

ज्ञान और वैराग्य चैतन्य की स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। श्रद्धा का प्रकर्ष प्रेरणा से प्राप्त क्रिया है। मन की एकाग्रता केवल इन्हीं से नहीं होती है। वह शरीरसंयम से भी हो सकती है। शरीर की चंचलता अर्थात् मन की चंचलता। शरीर की स्थिरता अर्थात् मन की स्थिरता। शरीर की स्थिरता शिथिलीकरण के द्वारा प्राप्त होती है। शिथिलीकरण की पूरी प्रक्रिया कायोत्सर्ग के प्रकरण में दी जाएगी।

शरीर की शिथिलता संकल्प और श्वास-संयम पर निर्भर है। आप पद्मासन या सखासन में बैठकर शरीर को ढीला छोड़ दीजिए और शरीर की शिथिलता का संकल्प कीजिए। शरीर शिथिल हो रहा है, ऐसा अनुभव कीजिए। अनुभव जितना तीव्र होगा, उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होगी।

संकल्प की साधना के पश्चात् श्वास-संयम का अभ्यास कीजिए। यहाँ श्वास-संयम से मेरा अभिप्राय प्राण को सूक्ष्म करने से है। हम जो श्वास लेते हैं, वह स्थूल प्राण है। श्वास लेने की जो शक्ति (श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति) है, वह सूक्ष्म प्राण है। नाभि और नासाग्र पर दो-चार क्षण के लिए मन को एकाग्र कीजिए। सहज ही श्वास-संयम हो जाएगा। श्वास की मंदता या सूक्ष्मता से शरीर की क्रियाएँ सूक्ष्म हो जाती हैं और शिथिलीकरण साध जाता है। शरीर की स्थिरता और श्वास की स्थिरता होने पर मन का निरोध सहज-सरल हो जाता है।

मन की प्रवृत्ति संकल्प और विकल्प के द्वारा बढ़ती है। उसका निरोध होने पर मन का निरोध अपने आप हो जाता है। संकल्प-निरोध और ध्यान में भिन्नता नहीं है। संकल्प का निरोध किए बिना ध्यान नहीं होता और जब ध्यान होता है, तब संकल्प का निरोध होता ही है। फिर भी यहाँ संकल्प-निरोध को मानसिक स्थिरता का ध्यान से भिन्न साधन माना है। उसका एक विशेष हेतु है। उसके द्वारा एक विशेष प्रक्रिया का सूचन किया गया है। संकल्प का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। लंबे समय तक उसे रोकने में कठिनाई होती है। इसलिए प्रारंभ में उस प्रवाह की निरंतरता में विच्छेद डालने का अभ्यास करना चाहिए। इस प्रक्रिया को आकस्मिक कुंभक के द्वारा संपन्न किया जा सकता है। आप पूरक और रेचन न करें! एक क्षण के लिए कुंभक करें, वह भी आकस्मिक ढंग से। जैसे कोई बाधा आने पर चलता पैर अकस्मात् रुक जाता है, वैसे ही श्वास को हठात् बंद कर दीजिए। क्षण-भर के लिए कुंभक की मुद्रा में रहिए। जिस क्षण कुंभक होगा, उस क्षण में संकल्प भी उसी प्रकार आकस्मिक ढंग से बंद हो जाएगा। इस क्रिया को पाँच-दस मिनट के बाद फिर दोहराएँ। इस प्रकार बार-बार अभ्यास करने से संकल्प का प्रवाह स्थूलित हो जाता है। लंबे समय की एकाग्रता के लिए यह क्रिया पृष्ठ-भूमि का काम करती है।

मानसिक निरोध का प्रबलतम हेतु ध्यान है। जब हम किसी एक विषय पर स्थिर रहने का अभ्यास करते हैं, तब मन की चंचलता को एक स्थान में रोकने का प्रयत्न करते हैं। उच्छृंखलता से विचरने वाली मन की चंचलता का क्षेत्र सीमित हो जाता है, हजारों-हजारों विषयों से हटकर एक विषय में सिमट जाता है, यह मन की चंचलता का गतिभंग है। इसकी बार-बार पुनरावृत्ति होने पर वह गतिभंग गतिनिरोध के रूप में बदल जाता है। गौतम ने पृष्ठा—'भंते! एक आलंबन पर मन का सन्निवेश करने से क्या लाभ होता है?' भगवान् महावीर ने कहा—'गौतम! उससे चित्त का निरोध हो जाता है।'

चित्त-निरोध की प्रक्रिया गुरु के उपदेश से प्राप्त होती है और प्रयत्न की बहुलता से उसकी सिद्धि होती है। मन की स्थिरता जान लेने मात्र से नहीं होती। इसके लिए अनेक प्रयत्न करने होते हैं, लंबे समय तक निरंतर और श्रद्धा के साथ। कोई व्यक्ति मानसिक स्थिरता का अभ्यास करता है, उसमें पूरा समय नहीं लगाता अर्थात् तीन घंटे का समय नहीं लगता, उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। थोड़ा समय लगाने से कुछ लाभ अवश्य होता है किंतु कोई भी आदमी स्वल्प प्रयत्न से शिखर तक नहीं पहुँचता।

जिसका चित्त अनवस्थित होता है—कभी स्थिरता का अभ्यास करता है, कभी नहीं करता, इस प्रकार कभी-कभी अभ्यास करने वाला भी सफलता से वंचित रहता है। लंबे समय तक और निरंतर अभ्यास करने वाला भी श्रद्धा के बिना सफल नहीं हो सकता। श्रद्धा का अर्थ है, तन्मय हो जाना; ध्येय के प्रति समर्पित हो जाना या उसमें विलीन हो जाना।

गुरु का उपदेश—ध्यान की प्रक्रिया की शिक्षा, श्रद्धा, दीर्घकालीन और निरंतर अभ्यास—इस पूर्ण सामग्री के प्राप्त होने पर मानसिक एकाग्रता या निरोध की साधना सरल हो जाती है।

तीसरा प्रकरण

(१) एकाग्र मनःसन्निवेशं योगनिरोधो वा ध्यानम्।।

(१) आलंबन पर मन को टिकाना अथवा योग (मन, वचन और शरीर की प्रवृत्ति) का निरोध करना ध्यान है।

ध्यान

मन की दो अवस्थाएँ हैं—गत्यात्मक और स्थित्यात्मक। गत्यात्मक अवस्था को मन और स्थित्यात्मक अवस्था को ध्यान कहा जाता है। ध्यान करते समय मन संकल्पों से भर जाता है। एक-एक कर पुरानी स्मृतियाँ उभरने लग जाती हैं। सहज प्रश्न होता है कि इसका क्या कारण है? जब मन की प्रवृत्ति होती है तब उतनी चंचलता नहीं होती जितनी उसको स्थिर करने का प्रयत्न करने पर होती है। हम गहराई में जाएँ तो पाएँगे कि चेतना चंचल नहीं होती। मन चेतना का एक अंश है। वह भला कैसे चंचल हो सकता है? वह वृत्तियों के चाप से चंचल होता है। वृत्तियों का जितना चाप होता है, उतना ही वह चंचल होता है और वृत्तियाँ जितनी शांत या क्षीण होती हैं, उतना ही वह स्थिर होता है। यही ध्यान होता है। तालाब का जल स्थिर पड़ा है। उसमें एक ढेला फेंका और वह चंचल हो गया। यह चंचलता स्वाभाविक नहीं, किंतु बाह्य संपर्क से उत्पन्न है। ठीक इसी प्रकार मन की चंचलता भी स्वाभाविक नहीं, किंतु वृत्तियों के संपर्क से उत्पन्न होती है। मन की चंचलता एक परिणाम है। वह हेतु नहीं है। उसका हेतु है—वृत्तियों का जागरण।

वृत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं—सत् और असत् असत् से सत् की ओर जाना पहला चरण है और दूसरा चरण है असत् को क्षीण करना। असत् में मन चंचल रहता है, सत् में शांत और असत् को क्षीण करने पर वह अतिमात्र शांत हो जाता है। इस सारी प्रक्रिया को मनोगुप्ति कहा जाता है। गुप्त मन की तीन अवस्थाएँ हैं।

(१) कल्पना-विमुक्त, (२) समत्व-प्रतिष्ठित, (३) आत्माराम।

विमुक्तं कल्पनाजालं, समत्वेषु प्रतिष्ठितम्।
आत्मारामं मनश्चेति, मनोगुप्तिस्त्रिधोदिता।।

कल्पना-विमुक्त

मन को एक साथ खाली नहीं किया जा सकता। उसे असत् कल्पनाओं से मुक्त करने के लिए सत् कल्पनाओं का आलंबन लिया जाता है। इन कल्पनाओं का विशद वर्णन प्राचीन साहित्य में मिलता है।

कल्पना करें कि हृदय कमल है। उसके चार पत्र हैं। बीच में एक कर्णिका है। चार पत्रों और कर्णिका पर क्रमशः अ, सि, आ, उ, सा लिखा हुआ है। प्रत्येक अक्षर ज्योतिर्मय है और वह प्रदक्षिणा करता हुआ घूम रहा है। यह कल्पना पृष्ठ होगी तो दूसरी कल्पनाएँ अपने आप विलीन हो जाएँगी।

दो नासाग्र, दो आँख, दो कान और एक मुख—ये सात रन्ध्र हैं। इन पर क्रमशः ण, मो, अ, र, हं, ता, णं—इस मंत्र-जप के साथ ध्यान किया जाए। वर्ण और स्थान के ध्यान साथ-साथ हों। इससे मन शेष कल्पनाओं से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार सैकड़ों उपाय साधना की लंबी परंपराओं में प्राप्त होते हैं।

समत्व-प्रतिष्ठित

वृत्तियाँ दबी रहती हैं। वे निमित्त का योग पाकर उत्तेजित होती हैं और उभर जाती हैं। उनकी उत्तेजना का बहुत बड़ा निमित्त है विषमता। जब-जब मन में विषमता के भाव आते हैं, तब-तब वह चंचल अधीर और विक्षिप्त हो जाता है। अमुक व्यक्ति ने मेरा सम्मान किया है और अमुक ने अपमान। सम्मान और अपमान की स्मृति होते ही मन चंचल हो उठता है। किंतु जिसका मन सम्मान और अपमान दोनों को ग्रहण नहीं करता तथा दोनों को आत्मा से बाह्य मानता है, उसका मन समता में प्रतिष्ठित रहता है। उसे सम्मान और अपमान की स्मृति ही नहीं होती तब वह उसके कारण चंचल, अधीर या अशांत कैसे हो सकता है? इस प्रकार राग-द्वेष जनित जितनी विषमताएँ हैं, उनका ग्रहण नहीं करने वाला मन समता में प्रतिष्ठित होता है।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३५) योग्यताभेदतः पुंसां, रुचिभेदो हि जायते।
रुचिभेदाद् भवेद् भेदः, साधनाध्वावलम्बने।।

सभी मनुष्यों की योग्यता समान नहीं होती इसलिए उनकी रुचि भी समान नहीं होती। रुचि-भेद के कारण साधना के विभिन्न मार्गों का अवलंबन लिया जाता है।

साधना का मूल स्रोत एक है। वह प्रत्येक साधक में भिन्नता नहीं देखता। भेद होता है बाहरी विशेषता के आधार पर। किसी साधक में श्रुत की विशेषता होती है, किसी में तप की किसी में ध्यान की, किसी में निर्भयता की, किसी में विनय की, किसी में कष्ट-सहिष्णुता आदि की। कुछ अपनी साधना में व्यस्त रहते हैं और कुछ अपना और पराया दोनों का हित साधते हैं। यह सब रुचि-भेद है। इससे मूल में अंतर नहीं आता। बाहरी विशेषताओं को मूल मानने पर भ्रांति हो जाती है।

(३६) बुद्धा केचिद् बोधकाः स्युः, केचिद् बुद्धा न बोधकाः।
आत्मानुकम्पिनः केचित् केचिद् द्वयानुकम्पकाः।।

कुछ स्वयंबुद्ध भी होते हैं और दूसरों को बोध-उपदेश भी देते हैं। कुछ स्वयंबुद्ध होते हैं पर दूसरों को बोध नहीं देते। कुछ केवल आत्मानुकंपी होते हैं और कुछ उभयानुकंपी—अपनी व दूसरों की—दोनों की अनुकंपा करने वाले होते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न 90 : भावना और अनुप्रेक्षा में क्या अंतर है?

उत्तर : मन की मूर्च्छा को तोड़ने वाले विषयों का अनुचिंतन करना अनुप्रेक्षा है। जिस विषय का अनुचिंतन बार-बार किया जाता है या जिस प्रवृत्ति का बार-बार अभ्यास किया जाता है, उससे मन प्रभावित हो जाता है, इसलिए उस चिंतन या अभ्यास को भावना कहा जाता है।

प्रश्न 91 : भावना के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : भावना के बारह प्रकार हैं—(१) अनित्य, (२) अशरण, (३) भव, (४) एकत्व, (५) अन्यत्व, (६) अशौच, (७) आश्रव, (८) संवर, (९) निर्जरा, (१०) धर्म, (११) लोक-संस्थान, (१२) बोधि दुर्लभता।

भावना के चार प्रकार भी मिलते हैं—

(१) मैत्री, (२) प्रमोद, (३) करुणा, (४) मध्यस्थता।

प्रश्न 92 : आत्मा के अवस्थारूप भाव के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : भाव के पाँच प्रकार हैं—

- (१) औदयिक — कर्मों के उदय से होने वाली आत्मा की अवस्था।
- (२) औपशमिक — मोहकर्म के उपशम से होने वाली आत्मा की अवस्था।
- (३) क्षायिक — कर्मों के क्षय से होने वाली आत्मा की अवस्था।
- (४) क्षयोपशमिक — घातिकर्मों के क्षयोपशम से होने वाली आत्मा की अवस्था।
- (५) पारिणामिक — परिणामन से होने वाली आत्मा की अवस्था।

प्रश्न 93 : पाँच ही भावों का कितने कर्मों से संबंध है?

उत्तर : उदय, क्षय व परिणामन आठ ही कर्मों का होता है। उपशम केवल मोहकर्म का होता है। क्षयोपशम चार घातिकर्मों—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय का होता है।

प्रश्न 94 : पाँच भाव जीव हैं या अजीव?

उत्तर : पाँच भाव जीव, अजीव दोनों हैं। आत्मा की अवस्था विशेष का नाम ही भाव है, अतः जीव है। जिन-जिन कर्म प्रकृतियों के उदय उपशम आदि से आत्मा की अवस्था परिवर्तित होती रहती है, उन-उन कर्म वर्णनाओं की दृष्टि से पाँचों भाव अजीव भी हैं। जैसे—ज्ञानावरणीय कर्म का उदय अजीव व उसका उदय निष्पन्न जीव हैं। उदय निष्पन्न के दो प्रकार हैं—(१) जीवोदय निष्पन्न, (२) अजीवोदय निष्पन्न।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य तुलसी

अर्जुनमाली



अर्जुनमाली मगध देश की राजधानी राजगृह में रहने वाला एक माली था। इसकी पत्नी का नाम था बंधुमती। दोनों पति-पत्नी नगर के बाहर एक बगीचे में रहते थे। उसी बगीचे में मुद्गरपाणि नामक यक्ष का मंदिर था। अर्जुन अपनी पत्नी के साथ बगीचे में फूल बीनता, बीने हुए फूलों से यक्ष की भक्तिभाव से पूजा करता और फूलों को ले जाकर नगर में बेच आता। यों वह अपनी आजीविका चलाता था।

एक दिन दोनों ही पति-पत्नी बगीचे में थे। अर्जुन यक्ष की पूजा में लीन था तथा उसकी पत्नी बंधुमती दूसरी ओर फूल बीन रही थी। इतने में उसी नगर में रहने वाले छः मित्र वहाँ बगीचे में आ गए। ये छहों जैसे ही दुरात्मा थे और यहाँ बंधुमती को देखकर इन पर कामुकता का नशा बुरी तरह से छा गया। अपना विवेक वे पूर्ण रूप से खो बैठे। आव देखा न ताव, अर्जुन को उसी यक्ष की प्रतिमा से ही बाँधकर बंधुमती से बलात्कार करने लगे। अपनी स्त्री का यों पतन अपनी आँखों के सामने भला कौन देख सकता है? अर्जुन में आक्रोश बुरी तरह से उमड़ पड़ा और लगा यक्ष की प्रतिमा को आड़े हाथों कोसने। रोषारुण होकर कहने लगा—रे यक्ष! बचपन से तेरी सेवा करता आया हूँ, तूने मेरी सेवा ही ली पर बदले में दिया यह पतन। जो एक पशु भी नहीं देख सकता। या तो मेरी सहायता कर अन्यथा---

अर्जुन का यों उलाहना सुनकर यक्ष ने अर्जुन के शरीर में प्रवेश किया। तब पौरुष तो बढ़ना ही था। उसने अपने बंधन कच्चे धागे के समान तोड़ दिए और उसी यक्ष की प्रतिमा में लगे मुद्गर को लेकर अर्जुन उन छहों की ओर लपका। उन छहों मित्रों को व बंधुमती को समाप्त कर दिया; पर फिर भी अर्जुन का क्रोध शांत न हुआ। उन्हें मारकर नगर की ओर दौड़ गया, जो भी मिला उसे मारने लगा। नगर में हाहाकार मच गया। राजा को पता लगते ही नगर के द्वार बंद करवा दिए गए। अर्जुन हाथ में यक्ष का मुद्गर लिए नगर की चहारदीवारी के बाहर घूमता रहता और वहाँ जो कोई भी मिलता उसे यमलोक पहुँचा देता। यों पाँच महीने तेरह दिन तक यक्षावेष्टित अर्जुन वहाँ घूमता रहता और ग्यारह सौ इकतालीस मनुष्यों को समाप्त कर दिया। मरने के भय से नगर के बाहर निकलने की कोई हिम्मत नहीं करता था।

उसी समय भगवान् महावीर वहाँ पधारे। यों राजगृह की संपूर्ण जनता तथा राजा श्रेणिक भी भगवान् के दर्शन-वंदन के इच्छुक थे; परंतु अर्जुनमाली के आतंक के कारण उनका साहस नगर के द्वार खोलने का नहीं हो रहा था। भगवान् का परम भक्त सुदर्शन सेठ, भगवान् के दर्शनार्थ लालायित हो उठा। सुदर्शन सेठ के अंतर्द्वन्द्व ने बाहर वाले भय की अवगणना करने पर उसे उतारू कर दिया। अत्याग्रह करके राजा की आज्ञा लेकर नगर से बाहर निकला। अर्जुन ने ज्यों ही देखा, मुद्गर लिए उसकी ओर दौड़ा। सुदर्शन मरणांतक कष्ट समझकर सागारी अनशन ले ध्यानस्थ खड़ा हो गया। अर्जुन ने ज्यों ही सुदर्शन पर मुद्गर उठाया त्यों ही सुदर्शन के अमित आत्म-बल के सामने अर्जुन के शरीर में प्रविष्ट यक्ष उसके शरीर से निकलकर अपने स्थान को चला गया। लगभग छः महीनों से भूखा-प्यासा अर्जुन यक्ष के चले जाने पर मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर गया। सुदर्शन ने साश्चर्य उसे देखा, प्रतिबोध दिया और भगवान् महावीर के पास ले आया। प्रभु के उपदेश से प्रभावित होकर अर्जुन ने अपने-आपको संभाला। अपने किए पर अनुताप करने लगा और मुनिव्रत स्वीकार कर लिया। मुनित्व स्वीकार करके बेले-बेले (दो-दो दिन) का तप उसने प्रारंभ कर दिया। भिक्षा के लिए जब नगर में घुसा तब उसे मुनि-रूप में देखकर लोगों का क्रोध उमड़ना सहज था। अपने पारिवारिक सदस्यों का हत्यारा समझकर मुनि पर कोई पत्थर बरसाने लगा, कोई तर्जना, ताड़ना तथा वचनों से आक्रोश देने लगा। अर्जुनमाली ने इस उपसर्ग को बहुत ही समता से सहा। वह क्षमा की साकार प्रतिमा ही बन गया तथा उत्कृष्ट तितिक्षा से सभी कर्मों का क्षय कर दिया। छह महीनों की श्रमण-पर्याय में पंद्रह दिन की संलेखना करके मोक्ष प्राप्त किया।

(क्रमशः)



शासनमाता की स्मृतियाँ चिरकालीन रहेंगी

छापर।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की पहली पुण्यतिथि व होली उत्सव के संयुक्त कार्यक्रम में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि फाल्गुन शुक्ला १४ का दिन तेरापंथ धर्मसंघ के लिए अविस्मरणीय बन गया। एक वर्ष पहले राजधानी दिल्ली में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी सदा-सदा के लिए अपनी देह का त्याग कर विदेह अवस्था में चली गई थी। होली पर्व पर एक-दूसरे पर रंग लगाने की परंपरा है, किंतु वह कुछ समय के बाद साफ कर दिया जाता है। शासनमाता की स्मृतियाँ चिरकालीन रहेंगी, उनका रंग जो जन-जन के मन पर लगा है, वह कभी उतरने वाला नहीं है।

आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण तीनों आचार्यों की उन्होंने सेवा की थी। तीनों ही आचार्य उनकी सेवाओं के कारण निश्चिंतता का अनुभव करते थे। उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को चंद शब्दों में बांधा नहीं जा सकता। आचार्यश्री तुलसी का यह कथन कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की योग्यता आचार्य पद से कम नहीं है, उनकी महानता को प्रतिबिंबित करता है। पूर्ववर्ती सात साध्वीप्रमुखाओं की सभी विशेषताएँ उनके जीवन में मूर्तिमान

होती थीं। तभी तो आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनको असाधारण साध्वीप्रमुखा के अलंकरण से सुशोभित किया था। हम अपनी असीम श्रद्धा उनके पावन चरणों में अर्पित करते हैं। वह हमारे से बहुत दूर चली गई हैं। फिर भी हमारी स्मृतियों में सदा जीवित रहेंगी।

होली के संदर्भ में मुनिश्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्वों का एक महत्वपूर्ण स्थान है, पर उनमें भी कुछ ऐसे हैं जो जनजीवन से गहराई के साथ जुड़े हुए हैं। उन पर्वों में एक है—होली। होली अर्थात् नियति थी वह हो गई, अब क्यों चिंता और तनाव का भार ढोता है। निर्भर जीवन जीने की प्रेरणा इस पर्व में सन्निहित है।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी व होली के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किए। मुनि आत्मानंदजी व मुनि हेमराज जी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय सेठिया, अणुव्रत समिति सलाहकार रेखा राम गोदारा, ओसवाल पंचायत अध्यक्ष माणक बुच्चा, आचार्य कालू महाश्रमण वेलफेयर ट्रस्ट के मंत्री नरपत मालू, सरोज भंसाली व चंदा बुच्चा ने गीत व भाषण के द्वारा अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सुराणा ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति उद्गार

अहंम

● साध्वी अनुशासनश्री ●

चंदेरी री शुभ्र चाँदनी, साध्वीप्रमुखा गया कटै।
ममता री मूरत गया कटै, समता री सूरत गया कटै।
बण शासनमाता गया कटै।।

सहज समर्पण विनय नम्रता अनुशासन सुघड़ाई ही
हृदय कमल स्यूं वत्सलता री सरिता खूब बहाई ही
इमरत री बै मीठी बूँदा बरसावणिया गया कटै।।

पाँच दशक तक भैक्षव गण में एक सरीखो राज कर्यो
साधु सत्यां श्रावक समुदय रे दिल में हरदम वास कर्यो।
सबने अपणायत रे धागे में बांधण वाला गया कटै।।

प्रचन में गांभीर्य भर्यो सुण महाप्रज्ञ गुरु फरमाता
साध्वीप्रमुखा जद फरमावै पावां म्हे नित नूई बातां।
ओजस्वी वर्चस्वी वाणी सिद्ध करणिया गया कटै।।

गंगा सम निर्मल विमल विभा, तुलसी युग री तरुणिम आभा
प्रभु महाश्रमण बरतारे रा हा असाधारण कनकप्रभा
गुरुत्रय री सेवा साझी साता देवणिया गया कटै।।

दिन पर दिन महिनां पर महिनां बीत्या भूल नहीं पावां
मन मोहक छवि निरखण थारी म्हे सारा ही ललचावां
दर्श दिराओ मत ललचाओ आशा पुरावो आज अटै।।

लय : हल्दी घाटी में समर----

शासनमाता की यादों से----

● साध्वी मुदितयशा ●

शासनमाता की यादों से
महक रहा मन का हर पल्लव
जीवन था जीवंत प्रेरणा
सोच सृजन सब कुछ था अभिनव।

गुरु तुलसी की छत्रछाँव में
जीवन का प्रारंभ शुभंकर
करुणामय सिंचन पथदर्शन
लिखे प्रगति के छंद अनुत्तर/मनोहर
करती रही सदा आरोहण
मिलते रहते नव सोपान
सुविधावाद नहीं मनभाया
श्रम से बनी स्वयं पहचान
पा नेतृत्व निरामय तेरा
शिखर चढ़ा श्रमणी-गण-गौरव।

ब्रह्मसमय में नित्य जागरण
जप-स्वाध्याय साधना चलती
मिलता था आलोक नया जब
ज्ञानदान की बाती जलती।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रेरणा सम्मान समारोह एवं बैलेंसिंग वर्क एंड होम कार्यक्रम का आयोजन

उधना।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र व मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से शुरुआत हुई। हेमाली बेन बोधावाला व गणमान्य व्यक्ति द्वारा बैनर व लोगो अनावरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा जसु बाफना ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

ट्रस्टी कनक बरमेचा ने नए महिला मंडल को शुभकामना देते हुए कहा कि महिलाओं को उचित सम्मान मिलना चाहिए। हमारी कैरियर के साथ हमें अपने परिवार को भी संभालना चाहिए।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि घर, परिवार, ऑफिस के तालमेल को बैठाकर हमारी शक्ति का नियोजन करना चाहिए। सूरत सिटी संस्कार सिटी बने एवं हमारे भीतर के सामर्थ्य को जगाना चाहिए। आचार-विचार और सामर्थ्य का उपयोग कर आगे बढ़ना चाहिए।

रूपल सोलंकी ने शुभकामनाएँ देते हुए स्वयं के संस्मरण सुनाए। प्रेरणा सम्मान का वाचन गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना ने किया। सभा, परिषद, महासभा, चंदनबाला महिला मंडल, १८१ हेल्प लाइन, क्राइम

ब्रांच, सभी ने शुभकामनाएँ दी। कन्या मंडल व किशोर मंडल ने महिलाओं से संबंधित नाटिका प्रस्तुत की।

हेमाली बेन बोधावाला, शालिनी अग्रवाल, रूपल सोलंकी तीनों बहनों को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। महिला मंडल के पदाधिकारीगण व कार्यकारिणी बहनों की उपस्थिति रही।

संचालन उपाध्यक्ष महिमा चोरड़िया ने किया तथा आभार ज्ञापन मंत्री सुनिता चोरड़िया ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति उद्गार

शासनमाता आओ----

● समणी स्वर्णप्रज्ञा ●

शस्य श्यामला सरस्वती थी, संघ चंदना वरदायी।
शासनमाता आओ, आंखियां दर्शन पाने तरसायी।।

जीवन सफर बना सुहाना गुरु भक्ति में मस्त रही,
अंतिम श्वासें गुरु चरणों में, आत्मा में विश्वस्त रही,
अमल, धवल, उज्ज्वल, निर्मलतम संयम तेरा फलदायी।
शासनमाता----

कल्पतरु सम छायां दे, अपने पन का अहसास दिया,
मानस मंदिर में हमने, तुमको पूजा का स्थान दिया
ग्रंथों की तुम दिव्य भारती, निर्ग्रन्थी नव सुखदायी।।

गति, मति, धृति से फैली कीर्ति, नारी संस्कृति की तुम शान,
प्रकृति में रहती हरदम उतार-चढ़ाव का नहीं निशान,
सम श्रम शम से सति शेखरे, गण बगिया है महकायी।।

पदयात्रा इतिहास बना, गणपति ने विधिवत् नमन किया,
ज्योतिचरण श्री महाश्रमण ने तुमको संजीवन दिया,
सौभाग्यी किस्मत धारी हम, भिक्षु गण पा हरसायी।।

हाथ पकड़कर चलना सिखाया, ऊपर जाकर भूल गये,
स्वर्गलोक की देव-देवियां, क्या हमसे ज्यादा भायें,
सदा समर्पण, सांसें अर्पण, पदचिह्नों के अनुयायी।।

लय : कलयुग मारे बैठ---

अणुव्रत समिति की बैठक का आयोजन

जसोल।

साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा की अध्यक्षता में अणुव्रत समिति की बैठक स्थानीय पुराना ओसवाल भवन में आयोजित हुई।

सर्वप्रथम नवकार मंत्र से कार्यक्रम आयोजित हुआ। अणुव्रत समिति के मंत्री सफरु खान ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में विविध निर्णय लिए गए। जिसके अंतर्गत अणुव्रत आंदोलन का ७५वाँ वर्ष अणुव्रत महोत्सव वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। अणुव्रत के प्रभारी भुपतराज कोठारी ने भी अणुव्रत के कार्यक्रम की जानकारी दी। अणुव्रत आंदोलन का ७५वाँ अमृत महोत्सव बैनर का विमोचन किया गया।

इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष डूंगराराम, अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, कोषाध्यक्ष भीकमचंद छाजेड़, सहमंत्री महावीर सालेचा, संगठन मंत्री डूंगरचंद बागरेचा, ईश्वरसिंह इंदा, तेरापंथ सभा के पूर्व मंत्री संपतराज चौपड़ा, तेयुप के अध्यक्ष तरुण भंसाली आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के विविध आयोजन

मदुरांतकम् (तमिलनाडु)

जैन स्थानक में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में फाल्गुन शुक्ला द्वितीय को अणुव्रत आंदोलन एवं पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अमृत महोत्सव वर्ष के शुभारंभ पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि आज से ७४ वर्ष पूर्व मानवता के मसीहा, अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने मानव को मानव बनाने का स्वप्न संजोया, चिंतन किया, निर्णय लिया और क्रियान्विति में बदला। अनेकानेक जैन जैनेतर लोगों को अणुव्रती बनाया। आचार्यश्री तुलसी ने, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने और अब आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अणुव्रत का मिशन आगे चलाया तथा चला रहे हैं।

हिंदु कारनेशन स्कूल में साध्वी सिद्धांतश्री और साध्वी दर्शितप्रभा जी ने विद्यार्थी जीवन में अणुव्रत का क्या उपयोग? कैसे अणुव्रत के नियम स्वीकार किए जाते हैं, आदि विषयों पर मार्गदर्शन दिया। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने हिंदी में अणुव्रत विषय पर बताया उसे तमिल भाषा में मयंक चोरड़िया ने अनुवाद करके बताया। मदुरांतकम् श्री संघ के अध्यक्ष गौतम कोठारी, महामंत्री प्रफुल्ल कोटेचा, दिनेश कांकरिया, तिरुकलीकुंड्रम अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ताराचंद बरलोटा, मंत्री दीपक दुगड़, पूर्व सभाध्यक्ष बाबूलाल खाटेड़ ने इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दी।

सिकंदराबाद

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की शक्ति व प्रताप से अणुव्रत सेवी, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति निर्मला बेद ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गर्वर्नमेंट गर्ल्स हाईस्कूल में कार्यक्रम रखा।

अणुव्रत अनुशास्ता गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने सरदारशहर में फाल्गुन शुक्ला द्वितीय २००५ में अणुव्रत का प्रवर्तन किया। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे नियमों का समूह। जो व्यक्ति की दशा व दिशा ही बदल देता है। व्यक्तित्व निर्माण कर जीवन को उजागर बनाता है।

अणुव्रत अमृत महोत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है। नैतिकता के बारे में सबको बताया जा रहा है। स्कूल में विद्यार्थियों को अणुव्रत की जानकारी दी गई। साथ में संकल्प करवाया तथा मेमोरी पॉवर बढ़ाने के प्रयोग करवाए गए।

नशामुक्त जीवन जीना, सबके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना, हिंसात्मक तोड़-फोड़ प्रवृत्ति में भाग नहीं लेना। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटना। सांप्रदायिक सद्भावना। गुरुजनों व माता-पिता के प्रति विनम्र व्यवहार व आज्ञा-पालन करना इत्यादि अणुव्रत के नियमों का विश्लेषण करके

संकल्प करवाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल की छात्राओं ने प्रार्थना से किया। प्रिंसिपल आचार्यजी अनुराधा भोडम, नागमणि मेडम अन्य सभी उपस्थित रहे।

प्रिंसिपल ने आभार ज्ञापित किया। परीक्षा के बीच में समय दिया निर्मला ने उनका आभार ज्ञापित किया हनुमान जिनेंद्र की तरफ से अणुव्रत का साहित्य व नोटबुक स्कूल में दिया गया। ३५० छात्राओं ने भाग लिया।

कोलकाता, हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में व कोलकाता अणुव्रत समिति व हावड़ा समिति के सहयोग से अणुव्रत अमृत महोत्सव का शुभारंभ फोरम प्रवेश में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक डॉ० राणा चटर्जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि धर्म के प्रभावक आचार्यों में आचार्यश्री तुलसी का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। आचार्यश्री तुलसी ने नैतिक विकास व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत का अर्थ है—छोटे-छोटे नियम। जीवन शुद्धि की न्यूनतम आचार संहिता का नाम अणुव्रत है।

अणुव्रत मानवीय एकता का सूत्र है। अणुव्रत पर्यावरण शुद्धि नशामुक्ति,

सांप्रदायिक सौहार्द, अहिंसा व्यवसाय शुद्धि आदि पर विशेष बल देता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि देश को अणुव्रत की नहीं अणुव्रत की आवश्यकता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर गीत का संगान किया। स्थानीय विधायक डॉ० राणा चटर्जी ने कहा कि जैन धर्म में पाँच नियम हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। कार्यक्रम का शुभारंभ फोरम प्रवेश के श्रावक-श्राविकाओं के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण कोलकाता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सिंधी व आभार हावड़ा अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष व कार्यक्रम के संयोजक दीपक नखत ने किया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन मुनि जिनेश कुमार जी ने किया। अतिथि व अन्य लोगों का अणुव्रत समिति द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में कोलकाता हावड़ा एवं उपनगर की सभी सभाओं, महिला मंडल, टीपीएफ, तेयुप जैन कार्यवाहिनी के पदाधिकारीगण की उपस्थिति रही। रैली के बाद ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ और अंत में प्रेस वार्ता के द्वारा अणुव्रत के बारे में चर्चा हुई। इस अवसर पर अणुविभा से राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पंकज दुधोड़िया, राष्ट्रीय मीडिया टीम के सदस्य वीरेंद्र बोहरा भी उपस्थित थे।

जितना शांत होंगे उतना जीवन में आनंद आएगा

चंडीगढ़।

जितना शांत अपने को कर पाएँगे उतना ही आपके जीवन में आनंद आएगा। उल्लास से भरपूर होने के लिए आपकी सुबह अच्छी होनी चाहिए और इसके लिए आपकी शाम का अच्छा होना बहुत जरूरी है। सुख-दुःख, लाभ-हानि, हारना-जीतना भी स्वाभाविक है। यह तो आता-जाता रहेगा। जब आप ऐसा स्वभाव बनाकर सोचेंगे, समझेंगे, जिएँगे, तब आप आनंदमय जीवन अवश्य जिएँगे। ये विचार मनीषी मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मनीषी संत ने आगे कहा कि इंसान सोचता है कि वह ऊँचाइयों के शिखर को चूमे बिना संघर्ष कर बैठे-बिठाए मुझे हर वस्तु मिल जाए कोई संघर्ष और कर्म ना

करना पड़े पर ऐसा संभव नहीं है, क्योंकि यह संसार कर्मभूमि है, जो जैसा बोता है वैसा ही काटता है।

मुनिश्री ने अंत में कहा कि अगर किसी को सेवा में आनंद न मिले तो इसका मतलब यह नहीं कि सेवा में आनंद नहीं है, बल्कि इसका सीधा-सा अर्थ है कि आपकी सेवा में कहीं कमी है, मन के किसी कोने में स्वार्थ है सेवा के भाव में कमी है निष्ठा में कमी है, आप अपनी सेवा के बदले में सम्मान चाहते, इसलिए आनंद का अनुभव आपको नहीं हो पा रहा है।

चाड़वास।

तेयुप, चाड़वास अभातेयुप के निर्देशन में आयोजित आयाम सार-संभाल यात्रा में शाखा परिषद के प्रभारी सुभम बरड़िया चाड़वास आए। चाड़वास में विराजित मुनि जंबू कुमार जी के दर्शन किए। उसके बाद परिषद कोषाध्यक्ष मनीष भंसाली ने शाखा प्रभारी का स्वागत किया। शाखा प्रभारी ने अभातेयुप के द्वारा आयोजित आयामों को करने की प्रेरणा प्रदान की। परिषद द्वारा किए गए आयामों की जानकारी ली। चाड़वास परिषद सदस्य राहुल भंसाली राकेश बेद, परिषद में किशोर साथ दिवेश सुराणा भी उपस्थित रहे।

शासनमाता के प्रति श्रद्धा अर्पण

थामला।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम पुण्यतिथि पर साध्वी परमप्रभा जी, साध्वी विनीतप्रभा जी, साध्वी श्रेयसप्रभा जी व साध्वी प्रेक्षाप्रभा जी के सान्निध्य में श्रद्धा अर्पण का कार्यक्रम मनाया गया। मंगलाचरण के बाद महिला मंडल, थामला ने गीतिका प्रस्तुत की। उसके पश्चात शासनमाता के सान्निध्य में रही साध्वियों ने उद्गार एवं संस्मरण की प्रस्तुति दी।

साथ ही कानोड़, अकोला, फतेहनगर, मावली, धोइंदा, जावड, पलाना से पधारे हुए महानुभावों के साथ ही धर्मचंद बडालमिया, शांतिलाल कुमठ, हरकलाल सियाल, हार्दिक व नैतिक जैन, काव्या जैन, निकिता सोनी ने शासनमाता के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को प्रस्तुत करते हुए शासनमाता के प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी परमप्रभा जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए शासनमाता की गौरव गाथा का गुणगान किया। संचालन तेरापंथी सभा अध्यक्ष चांदमल कुमठ ने किया। कार्यक्रम का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, थामला ने किया।

संगठन यात्रा : सार-संभाल

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्वावधान में विजयनगर में संगठन यात्रा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया। विजयनगर परिषद द्वारा संचालित विजय स्वर संगम के साथियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। परिषद पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष श्रेयांश गोलछा द्वारा किया गया। त्रिपुर से पधारे परिषद प्रभारी का स्वागत जैन पट्ट से किया गया।

मंत्री राकेश पोखरना ने कार्यकाल में किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। परिषद अध्यक्ष ने सभी कार्यसमिति सदस्यों, संयोजकों एवं प्रभारियों का परिचय शाखा प्रभारी को दिया। शाखा प्रभारी सोनु डागा ने कहा कि विजयनगर परिषद एक ऐसी परिषद है यहाँ पर अन्य परिषद अध्यक्षों को लाकर इनकी कार्यशैली के बारे में भी एक कार्यशाला रख सकते हैं।

अभातेयुप द्वारा संचालित चौका सत्कार में सहयोग, शनिवार की सामायिक भवन में करने के लिए प्रयास करें एवं युवादृष्टि के अधिक से अधिक सदस्य बनाने के लिए प्रेरणा दी। महामंत्री पवन मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि ऐसा कोई कार्य नहीं है जो विजयनगर परिषद नहीं कर सकती। ३५० की संख्या वाली यह परिषद बड़ी परिषदों के बराबर काम कर रही है। कार्यक्रम में परिषद पूर्व अध्यक्ष महावीर टेबा और निवर्तमान अध्यक्ष अमित दक ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन सहमंत्री संजय भटेवरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।

तनावमुक्ति से ही सफलता संभव

गुंटूर।

आंध्र प्रदेश के गुंटूर नगर में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'तनाव-कारण और निवारण कार्यशाला' का आयोजन तेरापंथी सभा, गुंटूर द्वारा जैन धर्मशाला में किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जब तक जीवन में आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान का प्रभाव है, तब तक हम चाहें कितने वेश बदलें, कितने ही अनुष्ठान करें, कितने बाहर के कार्यक्रम करें, हम सही अर्थ में धर्मध्यान का विकास नहीं कर सकते। एक प्रकार से आर्त्तध्यान का ही रूप है—मानसिक तनाव। यद्यपि आज शिक्षा बढ़ी है, स्मृद्धि बढ़ी है, सुविधाएँ बढ़ी हैं पर साथ-साथ मानसिक अशांति भी बढ़ी है। हर व्यक्ति अनमना, तनावग्रस्त दिखाई दे रहा है। तनाव मुक्ति के बिना सफलता संभव नहीं है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि तनाव मुक्ति के लिए जीवन शैली का संतुलित होना जरूरी है। धार्मिक साधना से संतुलन हो सकता है। वर्तमान में जीएँ। भूत और भविष्य में न खोएँ वर्तमान को विस्मृत करने वाला तनावग्रस्त बनता है। हर समय प्रसन्न रहना सीखें। प्रसन्नता से तनाव सदा दूर रहता है।

बालमुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि तनाव वर्तमान युग की सर्वप्रसिद्ध समस्या है। तनाव के कारण व्यक्ति का शरीर, मन और भाव भी प्रभावित होते हैं। कायोत्सर्ग की साधना से तनाव मुक्ति का जीवन जिया जा सकता है। कार्यक्रम में धीसूलाल अंबानी ने विचार रखे।

सार-संभाल एवं संगठन यात्रा

चाड़वास।

तेयुप, चाड़वास अभातेयुप के निर्देशन में आयोजित आयाम सार-संभाल यात्रा में शाखा परिषद के प्रभारी सुभम बरड़िया चाड़वास आए। चाड़वास में विराजित मुनि जंबू कुमार जी के दर्शन किए। उसके बाद परिषद कोषाध्यक्ष मनीष भंसाली ने शाखा प्रभारी का स्वागत किया। शाखा प्रभारी ने अभातेयुप के द्वारा आयोजित आयामों को करने की प्रेरणा प्रदान की। परिषद द्वारा किए गए आयामों की जानकारी ली। चाड़वास परिषद सदस्य राहुल भंसाली राकेश बेद, परिषद में किशोर साथ दिवेश सुराणा भी उपस्थित रहे।



तेरुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन



मेक योर मार्क कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अभातेरुप के तत्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत मेक योर मार्क का आयोजन किया गया। सामूहिक नवकार मंत्र के पश्चात् विजय स्वर संगम की टीम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महामंत्री पवन मांडोत ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। तेरुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा एवं सभा विजयनगर अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने अपनी शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने चार अलग-अलग सेशन में प्रतिभागियों को आत्मविश्वास, कोशिश करते रहना, समय

पाबं धता, निर्णय लेने की क्षमता, कम्युनिकेशन, टीम वर्क, मोटिवेशन, नेतृत्व क्षमता आदि बिंदुओं को विस्तार से समझाते हुए दैनिक जीवन में इनका कैसे उपयोग कर सकें, यह सिखाया एवं सभी के द्वारा पूछी गई जिज्ञासाओं के समाधान भी बताए। अंत में सभी प्रतिभागियों ने प्रण लिया कि वह आगामी जीवन में बताए गए समाधान पर अमल करते हुए अपने जीवन में परिवर्तन करेंगे एवं अपनी प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करेंगे। तेरुप, विजयनगर प्रबंध मंडल की टीम द्वारा मुख्य प्रशिक्षक का सम्मान करते हुए मोमेंटो भेंट किया गया।

इस कार्यक्रम में ४५ से अधिक लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक पवन बैद, सुनीत डागा, उत्तम बागरेचा का अथक श्रम रहा। इस अवसर पर अभातेरुप परिवार से दिनेश मरोठी, सतीश पोरवाड़, विशाल पितलिया, अमित दक, विनोद मूथा, राकेश दक, तेरुप विजयनगर से सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, संजय भटेवरा, कोषाध्यक्ष आलोक गंग, परिषद कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री राकेश पोखरणा ने किया व आभार उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

साध्वीश्री जी का एटीडीसी में पदार्पण

राजाजीनगर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी शोषाद्रीपुरम् से विहार कर तेरुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् में पधारीं। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का नाम अपने आपमें एक चमत्कार है। जिस नाम से अभातेरुप ने शाखा परिषदों के माध्यम से संपूर्ण भारत वर्ष में मानव सेवा के इस स्थायी उपक्रम को निरंतर गति प्रदान कर रही है। शाखा परिषदें भी इसकी खूब अच्छी सार-संभाल करते हुए जैन शासन का परचम लहरा रही हैं।

साध्वीश्री जी ने उदाहरण के माध्यम से लौकिक एवं लोकोत्तर धर्म की परिभाषा की व्याख्या की। लौकिक सेवा मानव जीवन का शृंगार है, कर्तव्य है, उसी प्रकार लोकोत्तर धर्म आध्यात्मिक जीवन की उन्नति एवं भावी जीवन को सफल बनाने हेतु उपयोगी है। हमको लौकिक धर्म में लोकोत्तर धर्म को स्थान प्रदान करना चाहिए।

राजाजीनगर तेरापंथ सभा मंत्री मदनलाल बोराना ने सभी का स्वागत किया। सभा परामर्शक ललित मांडोत, तेरुप

संस्थापक अध्यक्ष सुनिल बाफना, परामर्शक चंद्रेश मांडोत, तेरुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, राजेश देरासरिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सभा एवं तेरुप परिवार की अच्छी उपस्थिति रही।

जैनम लक्ष्मीनारायणपुरम ट्रस्ट के निवेदन पर साध्वीश्री देवैया पार्क स्थित जे०पी० समणी सेंटर पधारे। जहाँ जैनम परिवार द्वारा मानव सेवा उपक्रम के अंतर्गत सरकारी स्कूल में १०६ बेंच प्रदान किए जा रहे हैं, जिसका उद्घाटन साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एवं जयमल संप्रदाय में बहुत सामंजस्य रहा है। आपश्री ने आचार्य भिक्षु एवं आचार्य जयमलजी से संबंधित इतिहास से अवगत कराया।

जैनम अध्यक्ष रमेश सियाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए पूरे जैनम परिवार की ओर से साध्वीश्री जी को सान्निध्य प्रदान करने हेतु विशेष कृतज्ञता ज्ञापित की। ज्ञातव्य है जैनम परिवार के विशेष सहयोग से एटीडीसी श्रीरामपुरम् सुचारु रूप से मानव सेवा के क्षेत्र में गतिमान है।

संगठन यात्रा का आयोजन

भीलवाड़ा

मुनि पारस कुमार जी के सान्निध्य में एवं अभातेरुप के निर्देशन में तेरुप, भीलवाड़ा की संगठन यात्रा का आगाज परिषद प्रभारी लक्की कोठारी के नेतृत्व में हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। जिसमें कुलदीप मारु एवं दीपांशु झाबक ने विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन एटीडीसी के राष्ट्रीय कमेटी सदस्य गौतम दुगड़ ने किया। अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया ने तेरुप, भीलवाड़ा के सेवा कार्यों की जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया।

परिषद प्रभारी लक्की कोठारी ने भीलवाड़ा परिषद की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की एवं आने वाले शेषकाल में परिषद के कार्यों को तेज करने पर जोर दिया। भीलवाड़ा से अभातेरुप के गौतम दुगड़ एवं कुलदीप मारु ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री राजू कर्णावट ने किया और सभी सदस्यों की जागरूकता और संघनिष्ठा के बारे में बताया। आभार कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया ने व्यक्त किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया एवं तेरुप सदस्य शैलेंद्र नेनावटी, पंकज कोठारी, पीयूष रांका, प्रतीक श्यामसुखा, दीपांशु झाबक, विकास खाब्या, लोकेश बोधरा, राकेश जीरावला एवं बड़ी संख्या में संस्था के पदाधिकारी एवं अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

फरीदाबाद

तेरुप, फरीदाबाद के शाखा प्रभारी जतन शामसुखा अपने अभातेरुप साथी राजेश जैन के साथ सार-संभाल हेतु फरीदाबाद पधारे।

सामूहिक नवकार मंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई और उस क्रम में विजय गीत का संगान एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। तेरुप, फरीदाबाद के अध्यक्ष विवेक बैद ने स्वागत

भाषण दिया व मंत्री जितेंद्र लुणिया द्वारा वर्ष-२०२२-२३ में तेरुप, फरीदाबाद द्वारा किए गए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण दिया। फरीदाबाद के ही अभातेरुप सदस्य राजेश जैन ने तेरुप के सभी उपस्थित सदस्यों से परिचय कराया व फरीदाबाद के सदस्यों के संघ निष्ठा व जागरूकता के बारे में बताया।

जतन शामसुखा ने युवादृष्टि, चौका सत्कार, रास्ते की सेवा, टीपीएफ व अन्य अभातेरुप आयामों के विषयों पर अपनी बात रखी और इन विषयों पर चिंतन भी किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष विनीत बैद द्वारा किया गया।

◆ न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।

— आचार्यश्री महाश्रमण

दो दिवसीय मास्टर ऑफ सेरेमनी कार्यशाला

सूरत।

अभातेरुप के निर्देशन में तेरुप, सूरत द्वारा आयोजित दो दिवसीय मास्टर ऑफ सेरेमनी कार्यशाला के दीक्षांत समारोह में तेरुप उपाध्यक्ष सचिन चंडालिया की अध्यक्षता में भव्य आगाज हुआ।

सीपीएस/एमओसी चीफ ट्रेनर अरविंद मांडोत, नेशनल ट्रेनर बबीता रायसोनी, तेरुप, सूरत मंत्री अभिनंदन गादिया, तेरुप पदाधिकारी, कार्यकर्ता सीपीएस/एमओसी टीम की उपस्थिति रही। संभागी के रूप में १६ संभागियों ने अपनी टीम के साथ टास्क के रूप में विभिन्न-विभिन्न विषयों पर डिबेट्स की चीफ ट्रेनर अरविंद मांडोत तथा नेशनल ट्रेनर बबीता रायसोनी ने संभागियों को प्रोत्साहित करते हुए जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

कार्यशाला प्रतिभागियों ने फीडबैक के रूप में सेशन और कुशल आयोजन की प्रशंसा करते हुए तेरुप, सूरत से ऐसे ही आयोजन निरंतर करने की इच्छा व्यक्त की। तेरुप मंत्री अभिनंदन गादिया द्वारा इस आयोजन से जुड़े सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।



सामूहिक ज्ञानशालाएँ

उत्तरपाड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में उपनगर ज्ञानशाला का सामूहिक आयोजन उत्तरपाड़ा में हुआ, जिसमें ४५ ज्ञानार्थी विद्यार्थियों और ११ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के आंचलिक समिति सदस्य मालचंद भंसाली और संयोजक संजय पारख को बहुत-बहुत साधुवाद।

मुनि जिनेश कुमार जी और मुनि परमानंद जी स्वामी ने सभी विद्यार्थियों को ज्ञानशाला के लाभ और ज्ञानशाला के नियमित रूप से आने के लिए प्रेरणा और विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की और भोजन करते वक्त टी०वी० और मोबाइल ना देखने के त्याग कराए।

कार्यक्रम में ज्ञानार्थी विद्यार्थियों ने १० प्रस्तुति पेश की। सभा के अध्यक्ष नोरतनमल सेठिया ने मालचंद भंसाली और संजय पारख का सम्मान किया, उसके पश्चात् ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजु कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम में उपस्थित ज्ञानार्थी विद्यार्थी अभिभावकों और संपूर्ण श्रावक समाज को साधुवाद।

बैंग पैकिंग कार्यक्रम

चेन्नई।

अभातेरुप द्वारा निर्देशित तेरुप, चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, चेन्नई ने बैंग पैकिंग कार्यक्रम के अंतर्गत संगठन को मजबूत करने हेतु तमिलनाडु में स्थित तड़ा की यात्रा की।

किशोरों ने इसमें ट्रेकिंग, स्विमिंग और साइट सीइंग भी की। किशोरों ने एक-दूसरे को जान-पहचान कर संगठन को मजबूत करते हुए ट्रेक पूर्ण किया। कुल ३० किशोरों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। तेरुप, चेन्नई से नितेश मरलेचा और रौनक डागा उपस्थित थे। बैंग पैकिंग कार्यक्रम के संयोजक किशोर मंडल के जयेश सियाल व संयम सकलेचा रहे।

♦ वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

11



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

13 - 19 मार्च, 2023

विनयशील बनें, प्रसन्न रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

आजोल, गांधीनगर (गुजरात)

५ मार्च, २०२३

अनंत आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः बीजापुर से लगभग 92 किलोमीटर का विहार कर आजोल गाँव में पधारे। मार्ग में पूज्यप्रवर स्थानक भवन एवं गोजारियाँ गाँव के बाहर होते हुए पधारे।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रवचन में फरमाया कि शास्त्र में चार समाधियों में से विनय समाधि प्रथम है। दसवेंआलियं के नौवें अध्ययन के चार विभागों में से यह पहला विभाग विनय समाधि है। आदमी को शांति चाहिए, चित्त समाधि चाहिए, चित्त में प्रसन्नता होती है, तो बीमारी भी परेशान नहीं करती। इसलिए विनयशील बनें और सदा प्रसन्न रहें।

गुरुदेव ने फरमाया कि चैत्तसिक प्रसन्नता जीवन में रहती है, तो एक उपलब्धि है। विनय से भी आदमी को शांति-समाधि की प्राप्ति हो सकती है। अहंकार सामान्यतया हितकर नहीं होता



है। शान है, पर ज्ञान में घमंड आ जाए तो ज्ञान की शोभा में कमी आ सकती है। इसे एक प्रसंग से समझाया। उन्होंने कहा कि पश्चिम रात्रि का समय अमृत वेला है। उस

समय स्वाध्याय-जप करना अच्छा है। उस समय साधना करनी चाहिए। संघ के प्रति निष्ठा हो। जीवन में निरअहंकारता, विनयता रहेगी तो चित्त में समाधि रहेगी।

शासनश्री साध्वी ज्ञानप्रभा जी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने साध्वी ज्ञानप्रभा जी के जीवन प्रसंग के बारे में समझाया। वे ३३

वर्ष तक साध्वी मालूजी के साथ रही थी। वर्तमान में वे साध्वी शुभप्रभा जी के साथ में थी। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की सहदीक्षित थी। पूज्यप्रवर ने उनकी आध्यात्मिक मंगलकामना के रूप में चार लोगस का ध्यान करवाया।

मुनि महावीर कुमार जी एवं साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने दिवंगत साध्वीश्री जी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना भी की। साध्वी उदितयशा जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सीएमडी शाह हाईस्कूल की ओर से नरेंद्र भाई सुथार, भूपेंद्र भाई गोसाईं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से हाईस्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सार-संभाल एवं संगठन यात्रा

राजाजीनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में शाखा परिषदों की सार-संभाल के तहत तेयुप, राजाजीनगर की सार-संभाल संगठन यात्रा स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुई।

संगठन यात्रा की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, विजय गीत का संगान भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम के द्वारा हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन शाखा प्रभारी तेजराज चोपड़ा द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने पधारे हुए अभातेयुप परिवार के युवा साथी,

तेयुप सदस्यों का स्वागत करते हुए आगामी पाँच महीनों का तेयुप का लक्ष्य एवं करणीय कार्यों की जानकारी प्रदान की।

तेयुप मंत्री कमलेश चोरडिया ने गत सात महीनों में तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संपादित कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी।

‘मैं हूँ सामायिक साधक’ के राष्ट्रीय सहप्रभारी राकेश दक ने सामायिक का महत्त्व बताते हुए कहा कि गुरु इंगित शनिवार सायंकालीन सामायिक करने का निवेदन किया। एमबीडीडी दक्षिण राज्य

प्रभारी अमित दक ने परिषद के कार्यों की सराहना की। सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़ ने तेरापंथ टास्क फोर्स में युवकों को जोड़ने का आह्वान किया।

तेयुप, राजाजीनगर शाखा प्रभारी तेजराज चोपड़ा ने अपने वक्तव्य द्वारा उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर तेयुप, राजाजीनगर परामर्शक प्रवीण नाहर, प्रबंध मंडल एवं तेयुप सदस्यों की उपस्थिति रही। बैठक का संचालन मंत्री कमलेश चोरडिया ने किया एवं आभार रणित कोठारी ने किया।

तीन सिंघाड़ों का मधुर मिलन

दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी का नेहरू प्लेस से ग्रीन पार्क पधारना हुआ। वहाँ विराजित वयोवृद्ध शासनश्री रत्न कुमारी जी आदि साध्वियों के साथ मधुर मिलन हुआ। उस समय काफी भाई-बहन उपस्थित हुए। मुनिश्री और साध्वीश्री जी की प्रसन्नता सभी के लिए प्रेरणा बनी।

शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी एम्स में प्रतीक्षारत थीं, जब मुनिश्री दर्शन देने पधारे उस समय सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया आदि नवयुवक भी साथ थे। सभी मुनिश्री के श्रम को देखकर आश्चर्यचकित थे।

ग्रीन पार्क में प्रवन एवं गोयल परिवार में सुभाष की धर्मपत्नी का कोलकाता में अकस्मात स्वर्गवास हो गया था। पारिवारिक जन आध्यात्मिक संबल पाने दिल्ली, हिसार, हांसी, कोलकाता से आए हुए थे। सभी आध्यात्मिक संबल पाकर बाग-बाग हो गए।

मुनिश्री वहाँ से अध्यात्म साधना केंद्र में पधारे वहाँ प्रवासित प्रबुद्ध साध्वी अणिमाश्री जी ने गीत के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री ने कहा कि मुंबई और बेंगलूर में साथ चौमासे हो चुके हैं। अब दिल्ली में भी गुरुदेव की कृपा से हम पहुँच गए हैं, खूब प्रसन्नतापूर्वक संघ प्रभावना के कार्य चलें।

इस अवसर पर सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, के०सी० जैन आदि काफी भाई-बहन उपस्थित थे।

स्वामि समाधि स्थल पर ‘भिक्षु भक्ति संध्या’ का आयोजन

सिरियारी।

शासनश्री मुनि मणिलाल जी के सान्निध्य में ‘भिक्षु भक्ति संध्या’ का आयोजन किया गया। प्रत्येक सुदी तेरस को अभातेयुप द्वारा संचालित इस उपक्रम में विभिन्न कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि आकाश कुमार जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार के द्वारा हुआ। फाल्गुन सुदी तेरस के इस कार्यक्रम का आयोजन उदयपुर तेयुप ने किया। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला ने किया। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप मंत्री, उदयपुर ने किया। उदयपुर से समागत खुशी कोठारी

व उर्वशी सिंघवी की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को झूमने पर मजबूत कर दिया। करीब दो सौ लोगों की उपस्थिति रही जो भक्ति रस के गीत सुनकर भाव-विभोर हो गए।

कार्यक्रम में समागत प्रेक्षा बोहरा, ईशिका राहौद्र, ऐश्वर्य नाहर, रवि नाहटा तथा पाली से आए राहुल बालड़ ने भी अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से श्रोताओं का मन मोहा।

मुनि आकाश कुमार जी ने कविता के माध्यम से जनता को भिक्षु स्वामी से खबरू कराने का प्रयत्न किया तथा मुनि हितेंद्र कुमार जी ने भी भक्ति गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम समाधी के बाद सिरियारी संस्थान की तरफ से कमल बैद ने दोनों कलाकारों का मोमेंटो के द्वारा सम्मान किया। आभार ज्ञापन, उदयपुर के गौरव जैन ने किया।

♦ पुरुषार्थ करणीय होता है, किंतु वह भी दुर्भाग्यशाली है जो गलत कार्यों में अपनी पुरुषार्थ का नियोजन करता है। व्यक्ति को विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए।

— आचार्यश्री महाश्रमण



सद्गुणों से सुरभित होता है जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

विजापुर, मेहसाणा (गुजरात),
४ मार्च, २०२३

जैन तीर्थ विजापुर में महायोगी आचार्यश्री महाश्रमण जी का प्रातः १० किलोमीटर विहार कर पदार्पण हुआ। स्थानकवासी संत मुनि विनय जी एवं मुनि गौतम जी ने भी पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। विजापुर का श्रावक समाज भी उल्लास से पूज्यप्रवर की अभिवंदना में समर्पित था।

गुरुदेव ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में सद्गुणों का विकास होता है तो यह जीवन एक प्रकार से सुरभित हो जाता है। जीवन में जितना दुर्गुणों का अंधकार रहता है, जीवन उतना ही कलुषित रह सकता है। सद्गुणों से जीवन में पवित्रता आ जाती है।

विकास की दिशा सही है, तो विकास करना बढ़िया है। लेकिन गलत दिशा का विकास न होना ही ठीक है। विकास का लक्ष्य स्पष्ट रहना चाहिए। गलत दिशा में गति हो जाएगी तो विकास उल्टा हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं, तो बच्चे अच्छे बन सकते हैं। समाज का भविष्य भी अच्छा हो सकेगा।



भौतिकता के युग में आध्यात्मिकता के संस्कारों की जरूरत है।

विद्यालयों में जीवन विज्ञान के माध्यम से ज्ञान दिया जाए तो बच्चों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं। मंजिल स्पष्ट हो बाद में गति हो। ज्ञान की चीजें आचरणों में भी आए। श्रद्धा और संस्कार अच्छे हों तो ज्ञान आचरण में आ सकता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य और तप मोक्ष

मार्ग है। सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य मिल जाएंगे तो एक मोक्ष मार्ग हो जाएगा।

मोक्ष प्राप्त करना है, तो धर्म के रूप में गति आवश्यक है। जो शुद्ध हृदय होता है, ऋजुभूत होता है, उसकी शोधि हो सकती है। छल-कपट दूषण है। ऋजुता, सरलता हमारे जीवन में रहे। ये आत्मा का सद्गुण है। हम जैन शासन में साधना कर रहे हैं। जैन शासन में अनेक

संप्रदाय-शाखाएँ हैं। इनमें अनेकता में एकता रहे।

आज श्रमण संघ के साधुओं से मिलना हुआ। आप विहार में भी सामने पधारे, यह आपकी विशेषता है। स्थानकवासी-तेरापंथी आगे जाकर तो पीढ़ी एक ही है। आज बुद्धिसागरजी के नाम से स्थापित स्थान में आए हैं, हम सबकी बुद्धि का विकास होना

चाहिए, हमें अपनी बुद्धि का अच्छा उपयोग करना चाहिए। हमारी बुद्धि अच्छी रहे।

श्रमण संघ के उपप्रवर्तक गौतम मुनि 'गुणाकार' ने कहा कि आज का यह माहौल देखकर आनंद की अनुभूति हो रही है। आचार्यश्री का आना खुशी का विषय है। पलक पावड़े बिछाकर आपका स्वागत करते हैं। आपश्री जन-जन के आराध्य देव हैं। छोटे-छोटे बच्चों ने तत्त्व ज्ञान के माध्यम से आचार्यश्री का विशेष स्वागत किया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष कन्हैयालाल चावत, स्थानकवासी समाज से शांतिलाल दक, बुद्धिसागर मंदिर से हितेंद्रभाई, मोहनलाल सुखलेचा ने अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद एवं स्थानकवासी महिला मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। कन्या मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति भी हुई।

शेराप्रांत के लोगों ने वर्षीतप के प्रत्याख्यान लिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

